जनवरी 2003
Rs. 10/-
चन्दामामा
नव वर्ष की शुभ कामनाएँ

Almond oil moisturiser and antiseptic soap.

द हाउस ऑफ मैसूर सन्दल चन्दन की खुशबू सीधे आपके घरों में ८० से भी अधिक वर्षों से ला रहा है।

झील का आख्यान

भारत की प्राकृतिक गरिमाओं में से एक है - चिल्का, एशिया का विशालतम नमकीन पानी की झील। नीली पहाड़ियों के पार्श्व में स्थित और द्वीपों - द्वीपिकाओं से जटित १,१०० वर्ग किलोमीटर में व्याप्त यह भव्य अतुल लवण-जल विस्तार समुद्र की ओर खुला अविस्मरणीय दृश्य की सृष्टि करता है।

कई द्वीपों में से एक में काली जय का मंदिर है। वह झील की आराध्य देवी है। सभी नाव चलानेवाले या उसमें यात्रा करनेवाले रक्षा के लिए उनसे प्रार्थना करते हैं।

एक बार उन्हें स्वयं एक संकट का सामना करना पड़ा। वह सचमुच में एक मानव बालिका थीं, किन्तु एक विशिष्टता के साथ। सम्भवतः वह एक आध्यात्मिक जीवन व्यतीत करना चाहती थीं। वह सामान्य सांसारिक जीवन नहीं जीना चाहती थीं। फिर भी उनके माता-पिता ने उनके लिए एक वर ढूँढ़ा। काली जय विवाह के लिए झील के पार एक गाँव में नाव से जा रही थीं। आधे मार्ग में आसमान काले बादलों से भर गया। तेज आँधी चलने लगी और ऊँची लहरों का पानी डगमगाती नाव में भरने लगा। यात्री भयभीत थे लेकिन काली जय आँखें बंदकर शांत बैठी रहीं।

आँधी के बाद तेज बारिश शुरू हो गई। वर्षा इतनी मूसलधार थी कि नाव में बैठे लोग एक दूसरे को देख नहीं सकते थे। अचानक नाव उलट गई। यात्री किसी प्रकार मृत्यु से जुझते हुए तैरकर किनारे तक आ गये। वर्षा बंद हो गई और बादल छँट गये। सभी सही सलामत थे, किंतु काली जय नहीं थीं।

ऐसा विश्वास किया जाता है कि लड़की की आत्मा ने झील को कभी नहीं छोड़ा। वह दूसरों की रक्षा के लिए चिंतित थीं। कालक्रम में लोगों ने उनकी पूजा करना आरंभ कर दिया और उनके लिए एक मंदिर का निर्माण किया।

प्रश्न

१. वे कौनसे तीन जिला हैं जो चिल्का की सीमा को स्पर्श करते हैं?

....

२. किस द्वीप पर कालीजय मंदिर निर्मित है?

....

३. उड़ीसा का कौनसा स्थान अपने गर्म गंधक झरने के लिए प्रसिद्ध है?

....

केवल १४ वर्ष की आयु तक के बच्चे भाग ले सकते हैं। अपने उत्तर दिये गये रिक्त स्थानों में स्पष्ट अक्षरों में लिखें। नीचे दिये गये कूपन को भरें और प्रविष्टि को निम्नलिखित पते पर जनवरी ३१, २००३ के अंदर भेज दें।

Orissa Tourism Quiz Contest - 2
Chandamama India Limited,
No.82, Defence Officers' Colony,
Ekkatuthangal, Chennai - 600 097.

नाम :.. आयु :..

पता :.. पिन :..

One winner picked by Orissa Tourism in each contest will be eligible for 3 days, 2-night stay at any of the OTDC Panthanivas, upto a maximum of four members of a family. Only original forms will be entertained. The competition is not open to CIL and Orissa Tourism employees and their family members. The judges' decision will be final.

Orissa Tourism, Paryatan Bhaven, Bhubaneswar-751 014. Ph:(0674)2432177, Fax:(0674) 2430887, e-mail:ortour@sancharnet.in. Website:Orissa-tourism.com

The soul of India

Touch Orissa to feel India

विशेष आकर्षण

सम्पुट - १०७ जनवरी - २००३ सञ्चिका - १

वारिस १९

अतिशर्मा की प्रशंसाएँ २९

माया सरोवर-१२ १३

उत्तम क्या-क्या है? ५७

अन्तरङ्गम्

SUBSCRIPTION

For USA and Canada
Single copy $2
Annual subscription $20

Remittances in favour of Chandmama India Ltd.
to
Subscription Division
CHANDAMAMA INDIA LIMITED
No. 82, Defence Officers Colony
Ekkatuthangal, Chennai - 600 097
E-mail : subscription@chandamama.org

शुल्क

सभी देशों में एयर मेल द्वारा
बारह अंक ९०० रुपये
भारत में बुक पोस्ट द्वारा १२० रुपये
अपनी रकम डिमांड ड्राफ्ट या
मनी-ऑर्डर द्वारा
'चंदामामा इंडिया लिमिटेड'
के नाम भेजें।

संस्थापक
बी. नागिरेड्डी और चक्रपाणि

मातृभाषा का रक्षण और संरक्षण करें !

यूनेस्को के अनुसार विश्व भर में बोली, लिखी और पढ़ी जानेवाली ६८०० भाषाओं में से ९० प्रतिशत इस सहस्राब्दी के अन्त तक प्रयोग से बाहर हो जायेंगी। कहा जाता है कि लोगों द्वारा प्रयुक्त होनेवाली भाषाओं के ह्रास के कारण सभ्यताएँ नष्ट हो गई हैं।

भारत में ३० से भी अधिक प्रमुख भाषाएँ हैं जिनके अपने विकसित साहित्य हैं, और लगभग ५०० बोलियाँ हैं जिन्हें लोग हर रोज प्रयोग में लाते हैं। हम सबको सामान्यतः अपनी-अपनी मातृभाषा से विशेष प्यार होता है।

मातृभाषा बालक अपने माता-पिता से सीखता है। वह बाद में उस भाषा से एक बहुत विशेष घनिष्ठ संबंध विकसित कर लेता है।

भाषा सामान्य रूप से मात्र संचार-साधन नहीं है जो लोगों को एक-दूसरे के निकट लाता है, बल्कि यह एक विशिष्ट संस्कृति का निर्माण करता है।

भाषाओं में एक दूसरे से ग्रहण करने की प्रवृत्ति होती है। बहुत से शब्द और अभिव्यक्तियाँ सभी भारतीय भाषाओं में समान रूप से पायी जाती हैं। लोगों में एकता लाने का यह एक उपादान है। अनेक भाषाओं में चन्दामामा के प्रकाशन का भी यही उद्देश्य है - भारतीय बच्चों में एकीकरण लाना। यह तभी सम्भव होगा जब हम अपनी मातृभाषा का विकास करें।

दुर्भाग्यवश आजकल अपनी मातृभाषा के प्रति अनभिज्ञता प्रकट करना लोकाचार हो गया है। हमारी किसी भाषा की मन्थर-मृत्यु न हो जैसा कि यूनेस्को को भय है, हमें अभी से अपनी भाषाओं की रक्षा और उनके संरक्षण का प्रयास करना चाहिए।

सम्पादक : *विश्वम*
Visit us at : http://www.chandamama.org

'हीरोज़ ऑफ इंडिया' प्रश्नोत्तरी में अपनी प्रविष्टि भेजें और आश्चर्यजनक पुरस्कार जीतें।

भारत के नायक-१६

यहाँ देश के कुछेक ऐतिहासिक नायकों का प्रसंग है। क्या तुम उन्हें जानते हो?

तीन सर्वशुद्ध प्रविष्टियों पर पुरस्कार में साइकिलें दी जायेंगी।

1. मैं कुशान वंश के राजाओं में सबसे महान हूँ। बौद्ध सिद्धान्तों का प्रचार करने के कारण प्रायः मुझे लोग दूसरा अशोक भी कहते हैं। मैं कौन हूँ?

----

2. मैंने कावेरी नदी पर एक विशाल शैल बाँध का निर्माण किया। मेरे नाम का अक्षरशः अनुवाद है - "जिसका पाँव जल गया हो।" मेरा नाम क्या है?

----

3. मैं मगध की गद्दी पर ईसा पूर्व ३२० ई. में बैठा। मेरा साम्राज्य पहली बार समुद्र से समुद्र तक यानी बंगाल की खाड़ी से अरब सागर तक फैला। क्या मेरा नाम जानते हो?

----

4. मुझे लोग "मैसूर का शेर" कहते हैं। मैंने मैसूर में रेशम-उत्पादन का आरम्भ किया। मैंने मैसूर को अस्त्र-शस्त्र में आत्म-निर्भर बनाया। क्या तुम मुझे जानते हो?

----

5. मैंने सन् १८०२ में अमृतसर के हरि मंदिर में स्वर्ण-चादर लगाने के लिए पाँच लाख रु. का दान दिया। क्या मेरा नाम जानते हो?

प्रत्येक प्रश्न के नीचे दिये गये स्थान को स्पष्ट अक्षरों में भरें। इन पाँचों में से आपका प्रिय आदर्श नायक कौन है? और क्यों? दस शब्दों में पूरा करें

मेरा प्रिय राष्ट्रीय नायक ....है, क्योंकि

....

प्रतियोगी का नाम: ....

उम्र: .... कक्षा: ....

पूरा पता: ....

....

पिन: .... फोन: ....

प्रतियोगी के हस्ताक्षर: ....

अभिभावक के हस्ताक्षर:...

इस पृष्ठ को काटकर निम्नलिखित पते पर ५ फरवरी २००३ से पूर्व भेज दें।

हीरोज़ ऑफ इंडिया प्रश्नोत्तरी-१६
चन्दामामा इन्डिया लि.
नं.८२, डिफेंस ऑफिसर्स कॉलोनी
ईक्काडुथांगल, चेन्नई-६०० ०९७.

निर्देश :-

१. यह प्रतियोगिता ८ से १४ वर्ष की आयु तक के बच्चों के लिए है।
२. सभी भाषाओं के संस्करणों से इस प्रतियोगिता के लिए तीन विजेता चुने जायेंगे। विजेताओं को समुचित आकार की साइकिल दी जायेगी। यदि सर्वशुद्ध प्रविष्टियाँ अधिक हुईं तो विजेता का चुनाव 'मेरा प्रिय नायक' के सर्वश्रेष्ठ विवरण पर किया जायेगा।
३. निर्णायकों का निर्णय अंतिम होगा।
४. इस संबंध में कोई पत्राचार नहीं किया जायेगा।
५. विजेताओं को डाक द्वारा सूचित किया जायेगा।

निम्नलिखित सभी बच्चों ने चन्दामामा में हीरो साइकिल प्रश्नोत्तरी की विजयी प्रविष्टियों के लिए पुरस्कार के रूप में एक-एक हीरो साइकिल प्राप्त की है।

अप्रैल २००२
अभिषेक, चेन्नई
वी. आशुतोष, मुम्बई
बी. अनु, गुन्टूर

मई २००२
कु. वीराबेन, अमरेली
राजू करमरकर, बांकुड़ा
सोनम नागर, उज्जैन

जून २००२
अतुला, कोयम्बटूर
आश्रय देवलीकर, मुम्बई
गोबर्धन साहू, भद्रक

जुलाई २००२
बी.ए. रघुनन्दन, नालगोंडा
श्री राउल तालुकदार, गुवाहाटी
कार्तिक शर्मा, कोट्टायम

अगस्त २००२
दीप्ति बहेरा, भुबनेश्वर
खितिश बिशवाल, कोलकाता
निर्बान बादू, कटक

सितम्बर २००२
आकाश दर्श पारिख, मुम्बई
आनन्द रामा खरावत, गोआ
के.जे. गणेश, कर्नाटक

संक्रान्ति

पोंगल सम्पूर्ण दक्षिण भारत में विशेष कर तमिलनाडु, आन्ध्र और कर्नाटक में बड़े शानदार ढंग से मनाया जाता है। मकर संक्रान्ति के दिन सूर्य भगवान की पूजा करना हमारी प्राचीन परम्परा है। हमारे लोग शक्ति के स्रोत-सूर्य भगवान की पूजा युगों-युगों से करते आ रहे हैं। सम्पूर्ण भारत में सूर्य भगवान के अनेक मंदिर हैं। उनमें सात को सर्वाधिक महत्वपूर्ण माना गया है।

Sri Suryanayana Moorthy

वे हैं - उड़ीसा में कोणार्क सूर्य मंदिर, आन्ध्र प्रदेश में अरसाविली सूर्य नारायण स्वामी मंदिर, गुजरात में मोथेरा सूर्य मंदिर, मध्यप्रदेश में ब्रह्मण्य देव मंदिर, आसाम में सूर्य पहाड़ मंदिर, बिहार के गया में दक्षिणार्क मंदिर तथा तमिलनाडु के कुम्भकोणम में सूर्यानर कोयल।

भारत के अल्पज्ञात स्थान

सिमलीपाल

यदि छुट्टियों का मज़ा लेने से तुम्हारा मतलब है विशाल वनक्षेत्र की वीथियों से गुजरना, हरियाली की ताजी सुगंध लेना और पक्षियों की विविध बोलियों का आनन्द लेना तो तुम सीधे सिमलीपाल आरक्षित वन क्षेत्र, उड़ीसा के लिए चल पड़ो।

नौ सौ मीटर की ऊँची पठार पर बसा हुआ सिमलीपाल आरक्षित वन २७५० वर्ग किलोमीटर के विशाल क्षेत्र में फैला हुआ है। इसका क्षेत्र विस्तृत है और अलग-अलग स्थानों की ऊँचाई अलग-अलग है, इसलिए वन के भिन्न-भिन्न स्थानों में भिन्न-भिन्न मात्रा में वर्षा होती है। और वहाँ की वनस्पति में सूखे पतझड़ी वन से लेकर आर्द्र सदाबहार वन तक का अन्तर पाया जाता है।

यह जंगल जीवमण्डल आरक्षण तथा वन्य जीवन अभयारण्य होने के अतिरिक्त बाघ परियोजना स्थल (प्रोजेक्ट टाइगर साइट) भी है। यह पौधों की लगभग १०७६ प्रजातियों, ८७ प्रकार के ऑर्किड, ४२ स्तनपायी प्रजातियों, २९ प्रकार के रेंगनेवाले पशुओं तथा पक्षियों की २३१ प्रजातियों का निवास स्थान है। खैरीबुरू तथा मेघासिनी पर्वत की चोटियों के प्राकृतिक दृश्य तथा बुद्धबलंगा, खैरी और सलन्दी जैसी कलकल करती नदियाँ सिमलीपाल के अन्य आकर्षण हैं।

जशीपुर के निकट रामतीर्थ में मगर पालन केंद्र सभी पर्यटकों के लिए अवश्य-दर्शनीय स्थान है।

वहाँ कैसे पहुँचे

सिमलीपाल पुथाबाटा (बारीपद से २२ कि.मी.) या जशीपुर (बारीपद से ९४ कि.मी.) से जाया जा सकता है। सिमलीपाल केवल १ नवम्बर से १५ जून तक खुला रहता है।

सिमलीपाल आरक्षित वन में प्रवेश करने के लिए तुम्हें प्रवेश-अनुमति-पत्र की आवश्यकता होगी जिसे पुथाबाटा या जशीपुर के प्रवेश बिन्दु पर प्राप्त किया जा सकता है।

बूढ़ी की मदद

उदय को श्रीपुर से रामपुर पहुँचने में रात हो गयी। गलियाँ सूनी-सूनी थीं। वह पहली बार यहाँ आया था। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि रात कहाँ गुज़ारे। उसे भूख भी लगी थी। एक घर का दरवाज़ा उसने खटखटाया।

थोड़ी देर बाद एक बूढ़ी औरत ने दरवाज़ा खोला। उसके पूछने से पूर्व उदय ने खुद अपना परिचय देते हुए कहा, ''दादी, मैं श्रीपुर से आ रहा हूँ। मेरा नाम उदय है। नौकरी की खोज में आया हूँ। ज़ोर की भूख लगी है।'' बूढ़ी ने उदय को ग़ौर से देखा और कहा, ''अंदर आ जाओ''

बूढ़ी ने पाटा दिखाते हुए उसे बैठने को कहा। फिर थाली में भोजन परोसा। उसने जल्दी-जल्दी खा लिया और कहा, ''दादी, रात को यहीं सो जाऊँगा और सबेरा होते ही चला जाऊँगा।'' फिर सरसरी नज़र से पूरे घर को देखने के बाद उसने कहा, ''क्या घर में कोई नहीं है?''

''मेरा बेटा और मेरी बहू पास ही के गाँव गयी है। कल शाम तक लौटेंगे।'' बूढ़ी ने कहा।

लेट जाने के पहले उदय ने उस बूढ़ी से अपने बारे में बताते हुए कहा, ''मेरी माँ और पिता दोनों ज़िन्दा हैं। मेरे पिता बुरी आदतों के शिकार हैं, इसलिए थोड़ी-सी जो ज़मीन थी, वह भी बेचनी पड़ी। मैं नौकरी की तलाश में यहाँ आया हूँ।'' फिर वह दरवाज़े के पास ही ज़मीन पर तौलिया बिछाकर लेट गया। पर उदय को नींद नहीं आ रही थी। इतने में बूढ़ी ने सोने की जंजीर अलमारी में रखकर ताला लगा दिया और चाभी तकिये के नीचे रखकर सो गयी।

उदय ने यह देख लिया। वह सोचने लगा कि जंजीर की चोरी कर भाग जाऊँ तो कुछ समय तक भूख से बच सकता हूँ। अगर यह गहना बहुत क़ीमती हो तो पिता के कर्ज़ों को लौटा दूँगा और खेत का एक छोटा टुकड़ा खरीद लूँगा।

पर दूसरे ही क्षण उसे लगा कि मैं ग़लती करने जा रहा हूँ। जिस बूढ़ी ने मुझ भूखे को खाना

-शैलजा -

खिलाया, रात को सोने के लिए जगह दी, उसी के साथ ऐसा बर्ताव करूँ! छी, ऐसी कृतघ्नता! यों वह बहुत देर तक सोचता रहा। आखिर उसने फ़ैसला किया। ऐसे मौक़े को हाथ से जाने नहीं दूँगा।

उदय ने थोड़ी देर तक सोने का बहाना किया। फिर वह चुपके से उठा। इतने में उसने सुना कि खिड़की के बाहर दो लोग कानाफूँसी कर रहे हैं। एक आदमी दूसरे से कह रहा था, "सावधान रहना। बूढ़ी के पास सिर्फ सोने की जंजीर ही नहीं, और गहने भी हैं। ज़रूरत पड़े तो उसका मुँह कपड़ों से भर देंगे और पूरा घर ढूँढ़ डालेंगे।"

यह सुनकर उदय ने अपने आपको धिक्कारा क्योंकि वह भी यही काम करने जा रहा था। उसने धीरे-से बूढ़ी को जगा कर चोरों की बात बतायी और कहा कि आगे क्या करना चाहिए।

फिर इसके बाद उदय ने दरवाज़ा खोला और बूढ़ी के साथ बाहर आया। चोर यह देखकर खुश हो गये कि दरवाज़ा खुला है और घर में कोई नहीं हैं। जैसे ही चोरों ने खुश होते हुए घर में क़दम रखा, उदय ने बाहर से ताला लगा दिया। अब दोनों चोर घर में क़ैद हो गये।

बूढ़ी ने ज़ोर-ज़ोर से "चोर, चोर" कहकर चिल्लाना शुरू कर दिया। अड़ोस-पड़ोस के लोग दौड़े-दौड़े आये और दरवाज़ा खोलकर दोनों चोरों को पकड़ लिया और उन्हें रस्सी से बाँध दिया। सबने उदय की चतुराई की भरपूर प्रशंसा की। वे दोनों चोरों को ग्रामाधिकारी के पास ले गये।

तब उदय ने बूढ़ी के पैर पकड़ कर कहा, "दादी, मुझे भी ग्रामाधिकारी के सुपुर्द कर दो। चोर नहीं आते तो मैं ही यह चोरी करता।"

बूढ़ी ने प्यार से उसकी पीठ थपथपाते हुए कहा, "मेरे अकेलेपन ने तुम्हें चोरी करने के लिए प्रेरित किया। तुमने अपनी दुर्बुद्धि को मान लिया और मुझे और मेरे गहनों को चोरों से बचाया। इसलिए मैं तुम्हें माफ़ करती हूँ। मेरा बेटा जैसे ही लौट आयेगा, तुम खेत पर उसकी सहायता करना। हमारे ही साथ रहना।"

उदय ने कृतज्ञतापूर्वक एक बार और बूढ़ी के पाँव छूकर नमस्कार किया।

माया सरोवर

12

(जयशील अपने प्रबल शत्रु कृपाणजित के मृत्यु-भक्षी वृक्ष के बलि होते ही सिद्ध साधक के साथ माया सरोवर की खोज में चल पड़ा। सर्पनख ने भी उनका अनुसरण किया। एक गुफा में से बाहर निकलनेवाले नर बानर को जलग्रह ने अपनी सूँड से कस लिया। इसे तीनों ने देखा। बाद...)

जलग्रह को देखते ही जयशील एवं सिद्धसाधक के साथ सर्पनख भी विस्मय में आ गया। वह जलाश्व से उतरने को था, पर रुककर बोला, ''जयशील और सिद्धसाधक! जलग्रह नामक वह पानी का हाथी अत्यंत शक्तिशाली मकरकेतु का बाहन है। वह माया सरोवरेश्वर के द्वारा 'सेवक श्रेष्ठ' नामक उपाधि प्राप्त महानुभाव है।''

सिद्धसाधक ''जय महाकाल की!'' चिल्लाते शूल उठाकर बोला, ''अरे जल प्राणी! हम जानते हैं कि मकरकेतु कैसा शक्तिशाली है! मेरा बाहन बननेवाले नरवानर को मारने का प्रयत्न करनेवाले इस जलग्रह का बध मैं सर्वप्रथम कर डालूँगा, इसके बाद मैं उसके मालिक को भी महाकाल की बलि दे दूँगा।'' यों कहकर वह गुफा की ओर दौड़ने को हुआ।

''सिद्धसाधक! जल्दबाजी न करो।'' जयशील ने सिद्धसाधक को रोका। इसके बाद अपने बाहन जलाश्व को उसके सामने ले जाकर धीमी आवाज में बोला, ''सिद्धसाधक! हमें माया सरोवर तक पहुँचने का अब बढ़िया मौक़ा हाथ

लगने जा रहा है। मकरकेतु के साथ मीठी बातें करके उसके द्वारा राजा कनकाक्ष के बच्चों का अपहरण करनेवाले माया सरोवरेश्वर तक हमें किसी न किसी उपाय से पहुँच जाना होगा।''

सिद्धसाधक ने अपने शूल को उतारकर कहा, ''इस बात का क्या भरोसा है कि मकरकेतु अभी तक जिंदा है? जलग्रह अपने मालिक को खोकर इन पहाड़ों तथा जंगलों में स्वेच्छापूर्वक विचरण करता होगा।''

जयशील तथा सिद्धसाधक यों बातचीत कर ही रहे थे कि उधर पहाड़ पर जलग्रह तथा नर वानर गुफा के सामने स्थित मैदान में भयंकर रूप से गरजते हुए लड़ रहे थे। हाथी की सूँड की पकड़ से बचकर नर वानर उस पर उछल पड़ा, अपने तेज दाढ़ों से हाथी का कुंभ स्थल चीरते, अपने हाथों से उसे बुरी तरह पीट रहा था। हाथी ने नर वानर को अपनी सूंड से पकड़कर नीचे पटक दिया और अपने पैरों से कुचल-कुचलकर उसे मारने का प्रयत्न करने लगा।

''सिद्धसाधक ! लो, देखो ! गुफा के ऊपर शिलाओं के पास एक-दो नहीं, बल्कि चार आदमी खड़े हो इस भयंकर लड़ाई को विस्मयपूर्वक देख रहे हैं।'' जयशील ने कहा।

सिद्धसाधक ने गुफा के ऊपर अपनी दृष्टि दौड़ाई। जयशील के कथनानुसार वहाँ पर चार आदमी खड़े थे। उन चारों की वेष-भूषा के आधार पर सिद्धसाधक केवल मकरकेतु को ही पहचान पाया। मगर वहाँ पर स्थित दो और व्यक्तियों ने जयशील को पहचान लिया। उनमें से एक व्यक्ति विस्मय के साथ और दूसरा भयभीत होकर उनकी ओर देखता रहा।

मकरकेतु ने सब की ओर एक बार दृष्टि दौड़ाई, फिर अपनी देह पर शाल ओढ़े, काली व छोटी दाढ़ीवाले तथा हीर-जटित सोने की टोपावाली लाठी धारण किये हुए व्यक्ति से बोला, ''वैद्यदेव ! जलाश्व पर बैठा हुआ युवक जयशील है। शूल धारण कर जमीन पर खड़ा हुआ व्यक्ति सिद्धसाधक है। तीसरे व्यक्ति को तो आप जानते ही हैं, वह मेरे अनुचरों में से एक है - इस सर्पस्वर का भाई।''

''मैंने नहीं सोचा था कि मैं अपने जीवनकाल में अपने बड़े भाई को जीवित देख सकूँगा।'' ये शब्द कहते सर्पस्वर आगे बढ़ने को हुआ, पर

मकरकेतु ने क्रुद्ध हो उसका हाथ पकड़कर पीछे की ओर खींच लिया।

''अरे सर्पस्वर ! तुम्हारा दिमाग़ ख़राब तो नहीं हो गया है? जयशील और सिद्धसाधक दोनों हमारे शत्रु हैं, फिर भी माया सरोवरेश्वर के आदेशानुसार हमें उनके साथ मित्रता का कपट अभिनय करना होगा। इसके वास्ते हमें कोई योजना बनानी होगी।'' यों कहकर मकरकेतु ने सर्पस्वर को डाँट दिया और हीर-जटित लाठी धारण किये हुए व्यक्ति से कहा, ''वैद्यदेव ! अभी तक आपने इस संबंध में अपना विचार प्रकट नहीं किया है?'' वैद्यदेव ने पहाड़ी की तलहटी की ओर विस्मयपूर्वक देखते हुए कहा, ''मकरकेतु, लगता है, तुमने मैदान में होनेवाली घटना पर ध्यान नहीं दिया है। जयशील की तलवार का वार खाकर तुम्हारा जलग्रह प्राण त्यागने जा रहा है।''

मकरकेतु जल्दी-जल्दी डग भरते पहाड़ पर से नीचे उतरने लगा। उसके पीछे अन्य लोग भी चल पड़े। उनमें पचीस साल का एक युवक भी था। वह लंगड़ा था, और उसका दायाँ पैर लकड़ी का बना था। वह एक मोटी लकड़ी की मदद से धीरे-धीरे पहाड़ से उतरने लगा।

नर वानर जलग्रह के हमले से घबराकर भागने की कोशिश कर रहा था, साधक शूल उठाकर मैदान की ओर चल पड़ा। जयशील ने उसे सचेत करते हुए कहा, ''सिद्धसाधक! इस वक़्त हमें मकरकेतु के पीछे आनेवाले और तीन व्यक्तियों का सामना करना होगा ! इसलिए तुम अत्यंत

सावधान रहो।''

''जयशील ! हमें इस दुनिया के किसी भी व्यक्ति से डरने की ज़रूरत नहीं है। साक्षात महाकाल के अनुचर के द्वारा प्राप्त महिमा-मंडित तलवार तुम्हारे हाथ में है। अब मेरे शूल की ताक़त का बयान करने की कोई ज़रूरत नहीं है।'' सिद्धसाधक ने कहा।

सर्पनख उनके पीछे जलाश्व पर चलते हुए चिल्ला उठा, ''महाशयो, आप लोग नर वानर का वध कीजिए! पर जलग्रह की कोई हानि न कीजिएगा, क्योंकि उसका मालिक अत्यंत पौरुषवान तथा महासत्व है !''

''तुम जिसे महासत्व बताते हो, उसे मैं अपने शूल से चुभोकर उसका चमड़ा निकालने जा रहा हूँ; समझे! अब अपना मुँह बंद कर लो।'' यों

समझाकर दाँत पीसते सिद्धसाधक चिल्ला उठा, "जय, महाकाल की !" फिर तेजी से वह आगे की ओर दौड़ पड़ा।

सिद्धसाधक लड़नेवाले जानवरों के समीप पहुँचने ही वाला था कि जयशील अपने जलाश्व पर वहाँ आ गया। नर वानर जमीन पर चित पड़ा हुआ था। और जलग्रह अपनी सूँड से उसे कसने जा रहा था, तभी जयशील ने उसकी सूँड पर तलवार की मूठ से वार किया। चोट खाकर जलग्रह पीड़ा के मारे चिंघाड़ करके जयशील पर आक्रमण करने को हुआ। जयशील ने शीघ्र गति से जलाश्व को पीछे की ओर हटाया और उछलकर जलग्रह पर कूद पड़ा।

इस पर जलग्रह अपने दुश्मन नर वानर की पकड़ ढीली करके जयशील को अपनी सूँड से नीचे गिराने की कोशिश करने लगा। जयशील ने बायें हाथ से उसकी सूँड पकड़कर दायें हाथ से उसके कुंभस्थल पर तलवार की मूठ का प्रहार करने लगा।

तब तक मकरकेतु दौड़कर वहाँ पर आ गया। उसे देखते ही जयशील बोला, "मकरकेतु, मैं पहले तुम्हारे जलग्रह का संहार करके तब तुम्हारा काम भी तमाम कर डालूँगा। तुम्हारी ही वजह से मैं और मेरा साथी सिद्धसाधक अकारण ही इन जंगलों में नाना प्रकार की यातनाएँ भोग रहे हैं।"

"जयशील ! तुम्हारा पुण्य होगा ! तुम जलग्रह का वध न करो ! हमलोग इस पल से मित्र हैं ! तुम तो माया सरोवर तक पहुँचना चाहते हो न? मैं उसका रास्ता बतला दूँगा।" मकरकेतु ने विनयपूर्ण स्वर में कहा।

ये बातें सुनते ही जयशील जलग्रह पर से झट से नीचे कूद पड़ा और बोला, "मैं न केवल

माया सरोवर का रास्ता जानना चाहता हूँ, बल्कि वहाँ पर बन्दी बनाये गये राजा कनकाक्ष के पुत्र व पुत्री को भी बंधनमुक्त कराना चाहता हूँ। इसके वास्ते तुम्हें यहाँ पर किसी गुफा में बन्दी बनाकर तुम्हारे साथियों के द्वारा तुम्हारे प्रभु माया सरोवरेश्वर को ख़बर कर देना क्या उचित होगा?''

मकरकेतु जवाब देने जा रहा था, इसके पूर्व ही सिद्धसाधक चिल्ला उठा, ''महाकाल की जय!'' फिर बोला, ''जयशील! तुमने जो सोचा, बिलकुल वह ठीक है। यह भाग न जाये, इसके वास्ते इसका कंठ आधा काट डालो और इसके हाथ-पैर बाँधकर गुफा में डाल दो। इसके तीनों दोस्तों को बाद को नर वानर ना आहार बना डालेंगे।'' इसके बाद उसने नर वानर के कलेजे के पास कान ले जाकर उसकी नाड़ी की जाँच की, और कहा, ''अभी यह मरा नहीं है! इसका दिल धड़क रहा है! जलग्रह के प्रहारों से यह सिर्फ़ होश खो बैठा है। अरे जलपक्षी सर्पनख! तुम जल्दी नदी के पास जाओ। किसी वस्त्र को जल में भिगोकर शीघ्र ले आओ।'' यों सर्पनख को आदेश दिया।

मकरकेतु चुपचाप चारों ओर ताक रहा था, इसे देख सर्पनख वहाँ से हिला और थोड़ी ही दूर पर स्थित नदी की ओर चल पड़ा। इसके बाद सिद्धसाधक ने मकरकेतु के निकट जाकर कहा, ''मकरकेतु! लगता है, तुम अपने साथ तीन और जल आदमियों को ले आये हो!'' फिर उसके

नजदीक आनेवाले लोगों की ओर देख व्यंगपूर्ण स्वर बोला, ''ओह, यह तो आश्चर्य की बात है, तुम अपने साथ लकड़ी के पैरवाले एक लंगड़े को भी ले आये हो!''

''सिद्धसाधक! यह व्यक्ति हमारे जैसे माया सरोवर के प्रदेश में पैदा हुआ नहीं है। तुम लोगों जैसे मैदानों में पैदा हुआ व्यक्ति है। वह भी तुम्हारे राजा कनकाक्ष के बच्चों की खोज में आया हुआ है और एक चीते का शिकार होकर अपना एक पैर खो बैठा है। इसका नाम मंगलवर्मा है।'' मकरकेतु ने उत्तर दिया।

''ओह! हिरण्यपुर के सेनापति का पुत्र मंगलवर्मा है यह! जयशील के साथ स्पर्धा करके बाघों से लड़ने जाकर भागा हुआ कायर!'' फिर आश्चर्य में आकर अपने साथी

से बोला, ''जयशील ! क्या तुमने अभी तक इसे पहचाना नहीं? यह लकड़ी के पैरवाला व्यक्ति मंगलवर्मा है!''

जयशील ने इसके पूर्व ही मंगलवर्मा को पहचान लिया था, लेकिन मकरकेतु जिसे ''वैद्यदेव'' पुकार रहा था, उस व्यक्ति को पहचानकर वह आपाद मस्तक काँप उठा और उसे पुकारने को हुआ, ''देवशर्मा !'' पर उसके मुँह से बात नहीं निकली और, वह तुतलाने लगा। इसे भांपकर वैद्यदेव नामक व्यक्ति ने जयशील को इशारा किया, जिसका अर्थ था कि तुम ऐसा अभिनय करो कि तुम मुझे नहीं पहचानते!

इस बीच सर्पनख एक वस्त्र को पानी में भिगोकर ले आया और सिद्धसाधक के हाथ में दे दिया। सिद्धसाधक ने नर बानर के सिर पर पानी निचोड़कर अपनी हथेली से उसके सर पर जोर से दे मारा, फिर चिल्ला उठा, ''नर वानर! तुम जिंदा हो! उठो ! इस दुनिया में सिद्धसाधक की बात कभी झूठ नहीं हो सकती।''
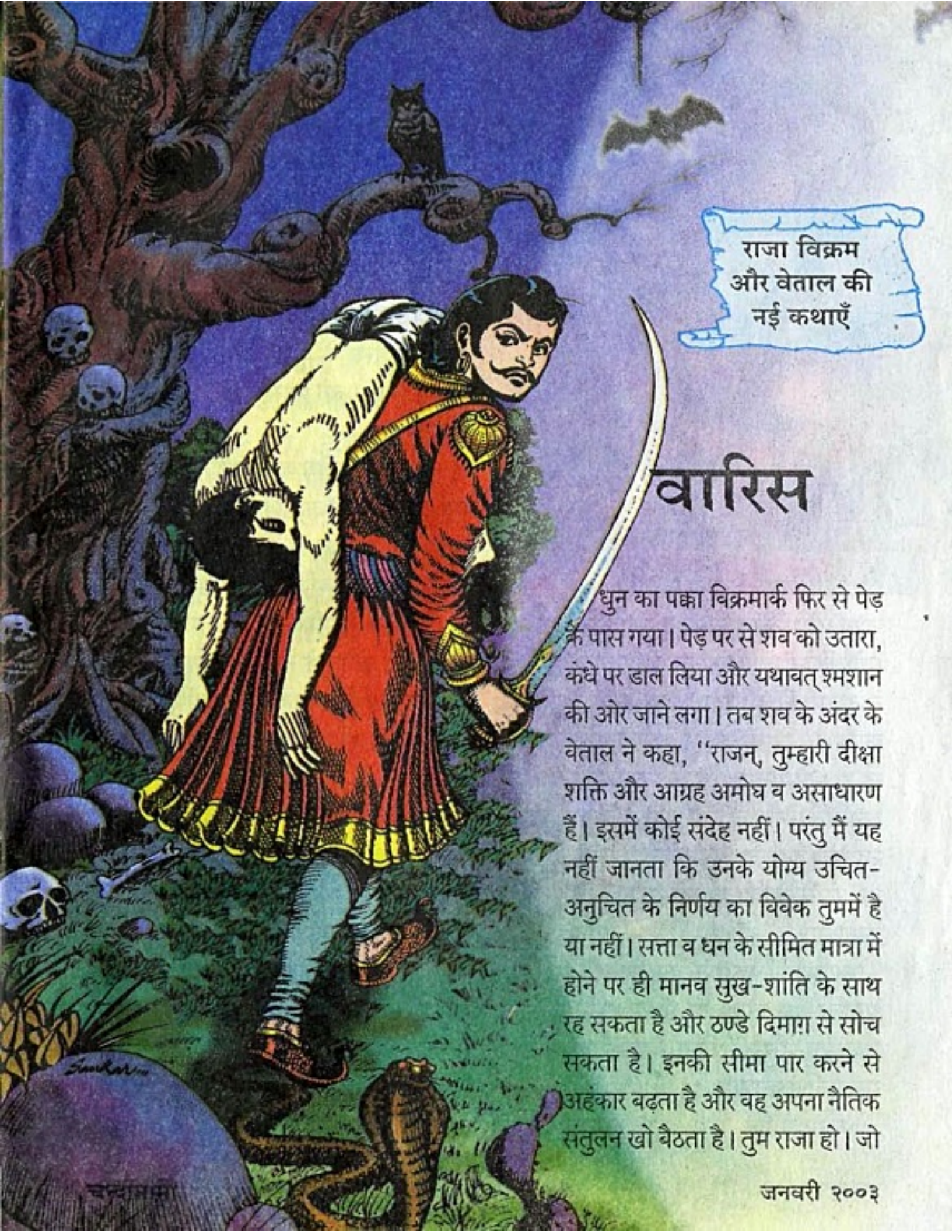
नर बानर ने दूसरे ही क्षण आँखें खोल दीं। चारों तरफ़ नज़र दौड़ाकर थोड़ी दूर पर नदी के किनारे सूँड उठाये खड़े जलग्रह को देख भयंकर रूप से गर्जन कर उठा और उठने को हुआ।

सिद्धसाधक ने उसका कंधा पकड़कर रोक दिया, तब बोला, ''अरे नर वानर! शांत हो जाओ! मैंने तुम्हें प्राण दान दिया है। इस पल से तुम मेरे सेवक हो! मेरे बाहन हो! है न?'' सिद्धसाधक ने अपने शूल को उसकी गर्दन पर टिकाकर कहा।

नर वानर क्रोध में आकर उठ खड़ा हुआ और आँखें तरेरते हुए दाँत पीसकर साधक पर कूदने को हुआ। साधक संभल गया, उसने उछलकर उसके माथे पर अपनी हथेली से दे मारा। चोट खाकर नर वानर नीचे गिर पड़ा, छटपटाते हुए धीरे से कराह उठा, थोड़ी देर बाद वह पीछे मुड़कर भागने को हुआ, फिर रुककर झट से सिद्धसाधक के चरणों के पास औंधे मुँह गिर पड़ा और अपने हाथ को ऊपर उठाया। सिद्धसाधक ख़ुशी से ठठाकर हँसने लगा।

(और है)

राजा विक्रम
और वेताल की
नई कथाएँ

वारिस

धुन का पक्का विक्रमार्क फिर से पेड़ के पास गया। पेड़ पर से शव को उतारा, कंधे पर डाल लिया और यथावत् श्मशान की ओर जाने लगा। तब शव के अंदर के वेताल ने कहा, ''राजन्, तुम्हारी दीक्षा शक्ति और आग्रह अमोघ व असाधारण हैं। इसमें कोई संदेह नहीं। परंतु मैं यह नहीं जानता कि उनके योग्य उचित-अनुचित के निर्णय का विवेक तुममें है या नहीं। सत्ता व धन के सीमित मात्रा में होने पर ही मानव सुख-शांति के साथ रह सकता है और ठण्डे दिमाग़ से सोच सकता है। इनकी सीमा पार करने से अहंकार बढ़ता है और वह अपना नैतिक संतुलन खो बैठता है। तुम राजा हो। जो

चाहो, कर सकते हो। अपने अधिकार के बल पर न्याय को भी अन्याय ठहरा सकते हो। इसलिए मुझे संदेह होता है कि तुम्हारी साधन-संपत्तियों ने तुम्हारी विचक्षणता को हर लिया है, जिसके कारण इस आधी रात में लक्ष्यहीन होकर भटक रहे हो। असीम संपत्ति के स्वामी होने पर कैसे अनुचित निर्णय ले लिये जाते हैं, इसका ज्वलंत उदाहरण है, वज्रनाथ। अपनी थकावट दूर करते हुए मुझसे उसकी कहानी सुनो।'' फिर वह यों कहने लगा :

वज्रनाथ विक्रमपुर का निवासी था। वह धनाढ्य था। पर दयालु भी था। जो भी उससे सहायता माँगता, बिना झिझके वह उसकी सहायता करता था।

धनाढ्य होते हुए भी इधर कुछ समय से वह चिंताग्रस्त रहता था, क्योंकि उसकी कोई संतान नहीं थी। उसे और उसकी पत्नी को यह चिंता खाये जा रही थी कि उनके मर जाने के बाद ऐसा कोई वारिस नहीं, जो संपत्ति की रक्षा करे।

उनके रिश्तेदारों को इस बात का पता चल गया कि उनकी संतान होने की कोई गुंजाइश नहीं है। इसलिए संपत्ति को हड़पने के उद्देश्य से उसकी प्रशंसा के पुल बाँधने लगे, उसकी चापलूसी करने लगे। उसके प्रति विशेष आदर दिखाने लगे।

एक दिन वज्रनाथ का दूर का रिश्तेदार नागेंद्र वर्मा उससे मिलने आया। भोजन कर चुकने के बाद वर्मा ने वज्रनाथ से कहा, ''मेरा बेटा चंद्रशेखर बड़ा ही बुद्धिमान है। स्थानीय गुरुकुल की शिक्षा उसने पूरी कर ली है। वाणिज्य शास्त्र में निष्णात होना हो तो उसे मणिद्वीप भेजना होगा। इसके लिए आवश्यक आर्थिक क्षमता मुझमें नहीं है। आपकी कृपा हो तो यह काम हो सकता है।''

''सरस्वती की कृपा पर्याप्त है। रही धन की बात, मैं इसका प्रबंध कर दूँगा। उसे मणिद्वीप भेजने की तैयारी करो।'' फिर उसने आवश्यक रक़म नागेंद्र वर्मा को दे दी।

वज्रनाथ के रिश्तेदारों को यह बात मालूम हुई। चूँकि वज्रनाथ चंद्रशेखर की बुद्धिमानी पर मुग्ध हो गया और उसकी शिक्षा के लिए धन-राशि भी दी, इसलिए उन्होंने सोचा कि वही उसका वारिस बनेगा।

वज्रनाथ एक बार पत्नी सहित जब मंदिर जा रहा था तब एक युवक ने दीन स्वर में कहा, ''महोदय, भूख से तड़प रहा हूँ। मदद कीजिए।'' वज्रनाथ ने उसे चंद अशर्फ़ियाँ दीं। उस बालक की आँखें प्रसन्नता से चमकने लगीं।

एक हफ़्ते के बाद जब वज्रनाथ फिर से उसी मंदिर में गया तब वह युवक फिर वहाँ दिखायी पड़ा। उसने देखा कि वह भीख नहीं माँग रहा है, बल्कि फूल बेच रहा है। वज्रनाथ को देखते ही हाथ जोड़कर युवक ने कहा, ''महोदय, आप जैसे महानुभावों के दान से मैं अपना पेट भर लिया करता था। पर उस दिन आपने अधिकाधिक अशर्फ़ियाँ दीं। उस रक़म से फूल खरीदता हूँ और भक्तों को बेचता रहता हूँ। मेरी ज़िन्दगी आराम से गुज़र रही है। आपसे जो रक़म मैंने ली, उसे किसी न किसी दिन लौटा दूँगा।''

वज्रनाथ उसकी बातों से बहुत संतुष्ट हुआ। उस दिन से जब कभी भी वह मंदिर जाता, उसी से मालाएँ खरीदता। यों समय गुज़रता गया।

एक दिन आधी रात को वज्रनाथ जागा हुआ कुछ सोच में मग्न था। उसकी पत्नी ने उसकी चिंता का कारण पूछते हुए कहा, ''भगवान ने हमें सब कुछ दिया, परंतु संतान नहीं दी। अपने रिश्तेदारों में से किसी योग्य बालक को गोद लें तो आगे जाकर वह आपके व्यापार में भी सहायता पहुँचायेगा। मैंने ठीक कहा न।''

''हाँ, मैं भी वही सोच रहा हूँ। जिनमें दैव भीति होती है, वे ही धन का सदुपयोग कर सकते

हैं। यह मेरा दृढ़ विश्वास है। इसीलिए मैं ऐसे व्यक्ति की खोज में हूँ, जिसमें दैव भीति हो और धर्मबुद्धि भी।'' वज्रनाथ ने कहा।

''यह निर्णय भगवान पर छोड़ दीजिए। निश्चिंत होकर सो जाइये।'' उसकी पत्नी ने लंबी साँस लेते हुए कहा।

दूसरे दिन शामको वज्रनाथ यथावत् मंदिर गया। तब एक युवक ने उसका ध्यान आकृष्ट किया। मंदिर के एक कोने में पद्मासन लगाकर वह बैठा हुआ ध्यान मग्न था। लगातार चार-पाँच दिनों तक वज्रनाथ ने उस युवक को उसी स्थिति में देखा। पाँचवें दिन युवक की आँख खुल जाने के बाद वज्रनाथ ने उससे पूछा, ''बेटे, तुम्हारा नाम क्या है? तुम हो कौन? क्या करते रहते हो?''
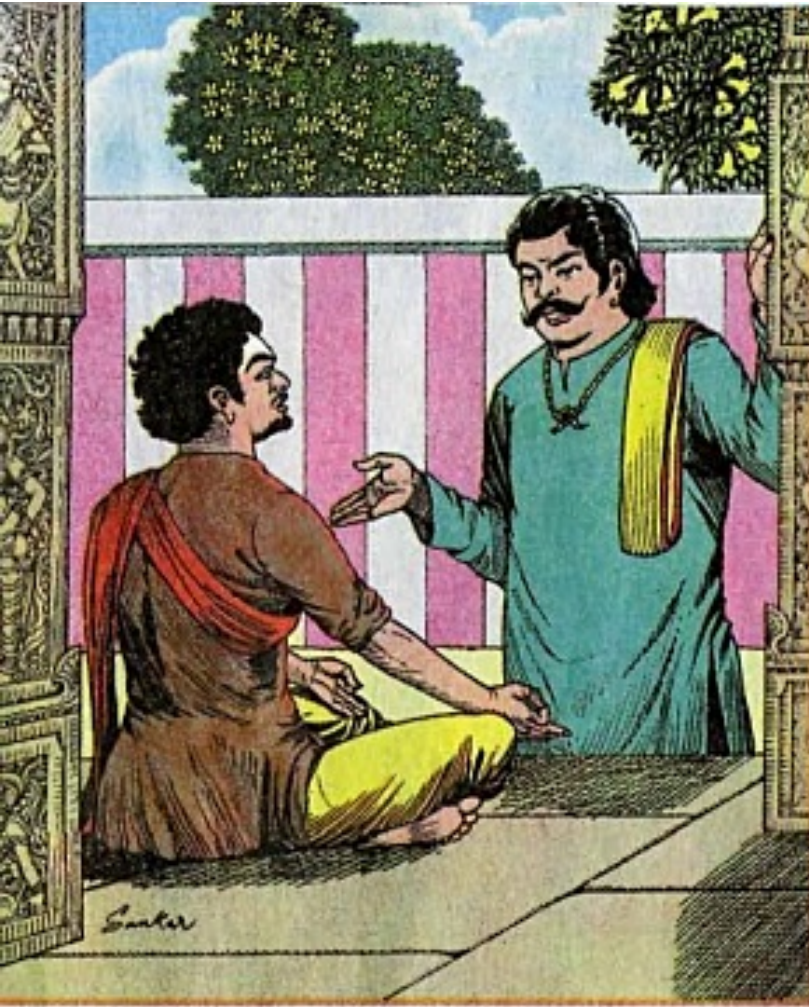
युवक के बारे में बताया। वह भी बहुत खुश हुई। दंपति ने निश्चय कर लिया कि उस युवक की गतिविधियों पर नज़र रखी जाए।

उस दिन से बज्रनाथ के नौकर तीनों वक़्त उस युवक के लिए भोजन ले जाने लगे। उसकी गतिविधियों पर नज़र रखने के लिए बज्रनाथ ने कुछ आदमियों को नियुक्त किया।

कुछ दिनों के बाद उन आदमियों ने आकर बज्रनाथ से कहा, ''महाशय, उस युवक की आँखों से सदा अश्रु धारा बहती रहती है।'' परेशान बज्रनाथ उस दिन शामको मंदिर आया और उस युवक से पूछा, ''मैंने सुना है कि मौन रहकर तुम हमेशा रोते रहते हो। अपनी समस्या मुझसे बताओ तो मैं उसका हल ढूँढ़ निकालूँगा।''

सत्यवान बज्रनाथ के पैरों पर गिर पड़ा और रोते हुए कहने लगा, ''मुझे माफ़ कीजिए।''

''मैं तुम्हें माफ़ करूँ? पहले बताओ, असल में बात क्या है?'' बज्रनाथ ने उसे उठाते हुए पूछा।

''आप जैसा समझते हैं, मैं वैसा नहीं हूँ। मैं एक चोर हूँ। एक दिन आधी रात को आपके घर में चोरी करने घुस आया था। उस समय आप अपनी पत्नी से भक्त युवक को गोद लेने की बात कर रहे थे। यह जानकर मैं खुशी के मारे पागल हो उठा कि मैं आपकी संपत्ति का वारिस बननेवाला हूँ और मुझे सुनहरा अवसर मिला है। मैं चुपचाप घर से बाहर आ गया। मैं जानता था कि आप दूसरे दिन अवश्य आयेंगे। मैंने भक्त का वेष धारण कर लिया और नाटक

''मैं एक अनाथ हूँ। मुझे सत्यवान कहते हैं। सदा भगवान के ध्यान में डूबा रहता हूँ। यही मेरा काम है।'' नम्र स्वर में युवक ने कहा।

''क्या कुछ खाते-पीते नहीं हो?'' बज्रनाथ ने पूछा।

''भगवान के ध्यान में जब मग्न रहता हूँ, भूख नहीं लगती। भगवान तो सबका रक्षक है। उसी की दया से सब जीते हैं। समस्त जीवों की रक्षा वही करता है। क्या ऐसे दयालु भगवान मेरी भूख को नहीं मिटायेंगे?'' युवक ने कहा।

उसके विचारों से बज्रनाथ बहुत प्रभावित हुआ। उसे लगा कि मैं ऐसे ही युवक को ढूँढ़ रहा हूँ। शायद भगवान भी यही चाहते होंगे।

घर लौटने के बाद उसने अपनी पत्नी से उस

किया मानों मैं भगवान के ध्यान में मग्न हूँ। आपने मुझे देख लिया। फिर उसके बाद जैसा मैंने सोचा, वही हुआ। पर समय गुज़रते-गुज़रते मुझमें भगवान के प्रति भक्ति ज़ोर पकड़ती गयी। मैं अपनी पुरानी चोरियों, पापों, दुष्ट कार्यों के बारे में सोचने लगा। तब मुझे अपने आप से घिन हो गयी और अनायास ही मेरी आँखों से आँसू बहने लगे।''

उसकी बातों को सुनकर वज्रनाथ एक क्षण तक स्तंभित रह गया। सत्यवान फिर कहने लगा, ''आप तो धर्मात्मा हैं। मैं पापी हूँ। आपको धोखा देने के लिए मैंने चाल चली। आप जो भी सज़ा देंगे, भुगतने के लिए तैयार हूँ। सज़ा भुगतने के बाद इस नगर को छोड़कर चला जाऊँगा।''

वज्रनाथ सोच में पड़ गया और फिर एक निर्णय पर आकर उसने कहा, ''सत्यवान्, तुम्हें यह नगर छोड़ने की कोई ज़रूरत नहीं। तुम ही मेरे वारिस हो।'' यों कहकर उसे अपने साथ घर ले गया।

वेताल ने यह कहानी सुनाने के बाद राजा विक्रमार्क से कहा, '' राजन्, अपने को चोर, पापी माननेवाले सत्यवान को वज्रनाथ ने अपना वारिस घोषित किया। मेरा मानना है कि असीम संपदा के स्वामी होने के कारण उसने मानसिक संतुलन खो दिया, उसकी उचित-अनुचित के निर्णय की शक्ति जाती रही। क्या उसका यह निर्णय यह नहीं बताता कि वह संपन्न है, पर बुद्धिहीन संपन्न। चंद्रशेखर अक़लमंद है। उच्च शिक्षा पाने की उसकी तीव्र इच्छा है। शिक्षा पाने पर वह वाणिज्य शास्त्र में पारंगत बन सकता है और उसके काम आ सकता है। फूलों को बेचनेवाला वह युवक भी समर्थ है,

आत्मनिर्भर है। छोटी कमाई से ही सही, वह अपने पैरों पर खड़े होने की इच्छा रखता है। पर इन दोनों युवकों को छोड़कर एक चोर को वारिस बनाना क्या उचित है? यह बज्रनाथ की मूर्खता नहीं तो क्या है? मेरे इन संदेहों के समाधान जानते हुए भी चुप रह जाओगे तो तुम्हारे सिर के टुकड़े-टुकड़े हो जायेंगे।''

वेताल के संदेहों को दूर करने के उद्देश्य से राजा विक्रमार्क ने कहा, ''अपने वारिस को चुनने के विषय में बज्रनाथ ने न ही जल्दबाजी की, न ही ग़लती की। उसने जो निर्णय लिया, वह सही है। वह खुद दानी था, दूसरों का उपकार करने की प्रवृत्ति उसमें थी, इसलिए उसने उच्च शिक्षा पाने के लिए चंद्रशेखर को धन दिया। उसने उसे अपना वारिस बनाने के उद्देश्य से उसकी सहायता नहीं की। अब रही भिखारी की बात, जो व्यापारी बना। उसे धन का मूल्य भी मालूम था और उसे यह भी मालूम था कि धन कैसे कमाना चाहिए। पर हम यह नहीं जानते कि बज्रनाथ का धन उसके हाथ लग जाए तो वह उसे कैसे खर्च करेगा और उसकी व्यवहार-शैली में क्या-क्या परिवर्तन आयेंगे। यह तो सच है कि सत्यवान ने बज्रनाथ को धोखा देना चाहा। वह कपटी भक्त बना। ध्यान में डूबे रहने का नाटक किया। परंतु भगवान के निरंतर ध्यान ने व बज्रनाथ के उदात्त स्वाभाव ने उसे बदल दिया। वह अपनी करनी पर पछताने लगा। पश्चाताप की भावना ने उसके सारे पापों को धो ड़ाला। इसलिए उसने असलियत को छिपाये बिना क्षमा माँगी और उसे सज़ा देने की विनती की। अब वह सच्चे अर्थों में भक्त व अच्छा आदमी बन गया। यह बात हमें भूलनी नहीं चाहिए कि रामायण महाकाव्य के कवि पहले चोर व लुटेरे थे। बज्रनाथ को भगवान में पूर्ण विश्वास था, इसलिए उसने विश्वास कर लिया कि चोर सत्यवान सचमुच ही भक्त बन गया है, इसलिए वह उसकी संपत्ति धर्ममार्ग में ही खर्च करेगा। इसी कारण उसने सत्यवान को अपना वारिस चुना। औचित्य और अनौचित्य का भेद वह जानता है।''

राजा के मौन-भंग में सफल वेताल शव सहित ग़ायब हो गया और फिर से पेड़ पर जा बैठा।

पकड़-प्रतियोग

प्यारी चाँदनी रात हो और तुम चंचल और उल्लसित अनुभव कर रहे हो। तो तुम क्या करोगे? इसी तरह के कुछ और प्राणियों को एकत्र करो और नीला-पुचि खेलो। यह तमिलनाडु में परम्परागत रूप से खेले जानेवाले एक सरल खेल 'दौड़-पकड़' का परिवर्तित रूप है। नीला-पुचि खुले स्थान में चाँदनी रात में खेला जाता है। खिलाड़ी अपने आपको दो भागों में बाँट लेते हैं। एक भाग छाया में खड़ा होता है और दूसरा चाँदनी में। एक दल के सदस्यों को तभी पकड़ा जा सकता है जब वे अपने क्षेत्र से बाहर आ जाते हैं। प्रत्येक दल बारी-बारी से एक पकड़नेवाले को भेजता है जो दूसरे दल के सदस्यों को अपने क्षेत्र से बाहर आने के लिए प्रलोभन देता है और फिर उन्हें पकड़ता है। और यदि पकड़नेवाला दूसरे दल के क्षेत्र में पकड़ा जाता है तो उसका दल अंक खो देता है। अगली चाँदनी रात में तुम भी इसे आजमाओ।

बादाम खाना मना है !

अगली बार जब तुम जेब से नोट या सिक्के निकालो तब इसके बारे में सोचो !

गुजरात में १७वीं शताब्दी में कड़वे बादाम को सिक्के के समान प्रयोग में लाया जाता था। लगभग ६० बादाम का एक पैसा होता था।

भारत की पौराणिक कथाएँ – ९

ऋषि, जिन्हें बादल प्यार करते थे !

बन में घूमते रहनेबाला सौम्य बालक आध्यात्मिक ज्ञान में निष्णात था, किन्तु सांसारिक ज्ञान में बिलकुल अनभिज्ञ था। उसे ऋष्यशृंग कहते थे, क्योंकि उसके ललाट के केन्द्र के ऊपर शृंग जैसी कोई चीज उग आयी थी। इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं थी। उसकी माँ यद्यपि परी थी लेकिन उसे किसी शाप के कारण बच्चे को जन्म देते समय हिरणी का जीवन जीना पड़ा था।

ऋष्यशृंग को प्रकृति से बहुत प्यार था। ऐसा मालूम होता था मानों प्रकृति भी उसे बहुत प्यार करती है। जब वह जंगल से होकर गुजरता तो फूलों की चमक बढ़ जाती और इन्द्र धनुष के रंग अधिक चटकीले हो जाते। और इससे भी बड़ी बात - बल्कि बहुत बड़ी बात यह थी कि जब भी वह आसमान की ओर देखता तो बादल बरसने लग जाते थे।

एक बार राजा लोमपाद के अंग राज्य में बहुत भारी सूखा पड़ा। उसे समझ में नहीं आया कि वह क्या करे। जंगल में प्रायः आने-जानेवाले ऋषियों को मालूम था कि ऋष्यशृंग के आसमान की ओर देखने मात्र से क्या चमत्कार हो जाता है।

उन सब ने राजा को सलाह दी कि वह

युवा ऋषि को राजधानी में आने के लिए राजी करे।

राजसभा के कुछ विद्वानों के साथ राजा के मंत्रीगण जंगल में गये। उन सबने युवा ऋषि से मिलकर उसे राजा की ओर से राजमहल में आने का निमंत्रण दिया। लेकिन ऋष्यशृंग ने राजकीय आमंत्रण अस्वीकार कर दिया। वह सुंदर वन तथा पशु-पक्षियों को, जो इसके आज्ञापरायण थे, एक दिन के लिए भी छोड़कर जाना नहीं चाहता था। राजा के दूतों को निराश होकर लौट जाना पड़ा।

''यह युवा ऋषि जंगल से बाहर कभी नहीं गया। उसे यह नहीं मालूम कि जंगल के बाहर के संसार में क्या-क्या आकर्षण हैं। किन्तु उसमें अनजान वस्तुओं के विषय में जानने की तीव्र उत्कण्ठा है। चहचहाते पक्षियों और नृत्य करते मयूरों को देखते-देखते मात्र उनकी ध्वनि और ठवन के प्रेम में जंगल में कोसों दूर तक चला जाता है। जिस चीज को उसने कभी नहीं देखा हो, उसके प्रति उसमें जिज्ञासा जगानी चाहिए। उस चीज को जानने के लिए वह अनायास कहीं भी जा सकता है। सिर्फ इसी तरह वह यहाँ आ सकता है।'' एक बुद्धिमान दरबारी ने सलाह दी।

राजा ने सुंदर स्त्रियों, नर्त्तकियों और गायकों के एक दल को यह उत्तरदायित्व सौंपा। दल जंगल में गया और ऋष्यशृंग के समक्ष प्रदर्शन करने लगा। युवा ऋषि यह

"ज्ञान का स्रोत हममें से हरेक के अंदर है।"

"समस्त ब्रह्माण्ड विविधता में एकता और एकता में विविधता का एक खेल है।"

- स्वामी विवेकानन्द

सब देख-सुनकर चकित और आनन्दित था। वास्तव में तब तक उसने किसी स्त्री को नहीं देखा था। उसने मंत्र-मुग्ध हो नर्त्तकी मण्डल का अनुगमन किया। उसे पता नहीं चला कि कब और कैसे वह राजमहल में पहुँच गया। उसने सूर्य की स्थिति को देखकर समय का अनुमान लगाने के लिए ऊपर की ओर देखा। बादल तुरंत घिर आये और वर्षा होने लगी।

राजा रानी के साथ युवा ऋषि के स्वागत के लिए बाहर आये। उन्होंने उसके चरण पखारे और उसे माला पहनाई तथा महल में पधारने के लिए अनुरोध किया। शिष्ट और कोमल हृदय ऋषि मना न कर सका। वह प्रारम्भ में वहाँ राजा के अतिथि के रूप में रहा, लेकिन शीघ्र ही राजा और रानी ने राजकुमारी शान्ता का बिबाह उसके साथ कर देने का निश्चय किया।

शान्ता वास्तव में अयोध्या के राजा दशरथ की पुत्री थी। अंग नरेश लोमपाद ने उसे गोद लिया था। दोनों राजा परम मित्र थे, इसलिए शीघ्र ही ऋष्यश्रृंग का परिचय राजा दशरथ से कराया गया। ऋष्यश्रृंग ने ही राजा दशरथ के लिए पुत्रकामेष्टि यज्ञ किया, जिसके फलस्वरूप राजा के चार पुत्र रत्न हुए - राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न।

- *बिन्दुसार*
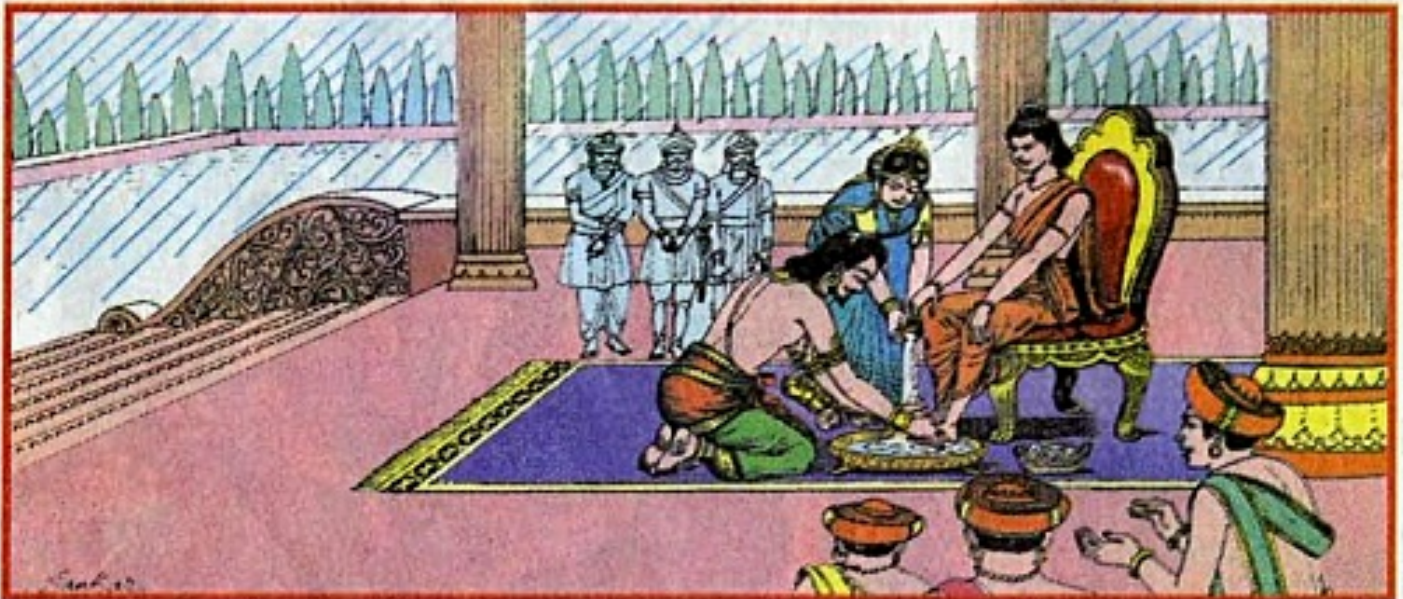
अतिशर्मा की प्रशंसाएँ

विशालसेन विदेह देश के राजा थे। दूसरों से अपनी प्रशंसा सुनना उन्हें बहुत प्रिय था। जो उनकी प्रशंसा करते थे, उन्हें वे कीमती भेंट देते रहते थे। इस कारण कितने ही लोग उनकी प्रशंसा करने आते रहते थे।

अनुभवी मंत्री मुक्तानंद को राजा की यह आदत अच्छी नहीं लगी। ''प्रभु, राजा चाहे तो प्रशंसा की क्या कमी? पर प्रशंसाओं से आपमें अहंकार बढ़ता है। अहंकार विवेक का नाश कर देता है। इससे आपके शासन में त्रुटियाँ आ जायेंगी और लोग तरह-तरह की मुश्किलों के शिकार हो जायेंगे। जो राजा प्रजा का क्षेम व कल्याण चाहते हैं, उन्हें प्रशंसाओं से दूर रहना चाहिए। जो राजा के दोष बताने का साहस करें, उन्हें भेंट देकर प्रोत्साहित करना चाहिए।'' यों मंत्री ने राजा को हितबोध किया।

राजा मंत्री का आदर करते थे। इसलिए तब से वे अपनी प्रशंसा करनेवालों को भेंट देने की पद्धति बंद कर दी। तब से वे उन लोगों को भेंट देने लगे, जो उनके दोष ढूँढ़-ढूँढ़कर बताते थे। उन्होंने इसकी घोषणा भी करवायी। फिर भी राजा के प्रशंसक उनकी प्रशंसा करते ही रहे। किसी ने भी उनमें कोई दोष नहीं पाया। राजा ने यह बात मंत्री से बताई और कहा, ''आप ही को उपाय सुझाना होगा कि मैं कैसे अपने अनुचरों की प्रशंसाओं को रोकूँ।''

''कोई भी व्यर्थ ही प्रशंसा नहीं करता। आप पहले जानिये कि किस प्रयोजन से आपके अनुचर आपकी प्रशंसा के पुल बाँध रहे हैं।'' मंत्री मुक्तानंद ने कहा।

विशालसेन ने दूसरे ही दिन अपने एक अनुचर को बुलाया, जिसका काम उनकी प्रशंसा

इस बात पर विशालसेन खुशी से फूल उठे और बोले, ''तुम्हारी बातों से मैं बहुत खुश हुआ। प्रशंसाओं पर भेंट न देने का नियम न होता तो तुम्हें सोने की अशर्फ़ियाँ देता। तुम्हारी कोई इच्छा हो तो बताओ। मैं उसे पूरी करूँगा, क्योंकि नियमानुसार इच्छाएँ पूरी की जा सकती हैं।''

उस अनुचर ने फ़ौरन कहा, ''प्रभु, आपके दरबार में काम करते हुए मैं सुखी हूँ। मुझे या मेरे परिवार को कोई शिकायत नहीं है। परंतु मेरा एक विवाहित छोटा भाई है, जिसके दो बच्चे भी हैं। उनका भी पालन-पोषण मुझे ही करना पड़ता है। यह मेरे लिए बड़ा भार साबित हो रहा है। आप उसे भी अपने दरबार में काम दिलवा दें तो आपका चिर ऋणी रहूँगा।''

करते ही रहना था। उन्होंने उस अनुचर से कहा, ''दोष गिनोगे तो तुम्हें भेंट दूँगा। प्रशंसा करोगे तो तुम्हें भेंट नहीं मिलेंगी।''

उस अनुचर ने हाथ जोड़कर विनयपूर्वक कहा, ''प्रभु, समकक्ष लोगों में आसानी से दोष दिखायी देते हैं। उनके दोष बताये न जाएँ तो उन्हें कष्ट होगा। इसी कारण समकक्ष लोगों को उनके दोष बताता रहता हूँ। बड़ों के दोष मुझ जैसे सामान्यों को दिखायी नहीं देते। मेरा विश्वास है कि बड़े लोग अपनी त्रुटियाँ खुद समझ जायेंगे और अपने को सुधार लेंगे। यह रही दोष की बात। अब प्रशंसाओं की बात करें। जो बात वास्तविक है, उसका प्रशंसा में परिवर्तित हो जाना सहज है। आपके बारे में जो वास्तविक है, मैं वही बताता हूँ। तो भला यह प्रशंसा कैसे हो सकती है!''

विशालसेन ने अनुचर के भाई को नौकरी दिलवा दी। उसी प्रकार कुछ और अनुचरों ने भी उनकी प्रशंसा करके अपना उल्लू सीधा किया। मंत्री ने राजा को सावधान किया तो राजा ने कहा, ''मेरे सबके सब अनुचर वे ही बातें बता रहे हैं, जो सच और वास्तविक हैं। उनका यह भी कहना है कि वे मुझसे किसी प्रकार के लाभ की आशा नहीं रखते।''

''प्रभु, अगर किसी से प्रशंसा का कारण पूछा जाए तो कुछ लोग बताने से डरते हैं। कुछ लोग संकोच करते हैं। इसलिए अच्छा यही होगा कि उनके बारे में उनसे पूछा न जाए, बल्कि दूसरों से पूछकर कारण जाना जाए।'' यों मंत्री मुक्तानंद ने राजा को सलाह दी।

विशालसेन मंत्री की इन बातों से मन ही मन चिढ़ गये। उन्हें लगा कि मंत्री हमेशा उनके आनंद

में बाधा डाल रहे हैं। फिर भी उन्होंने मंत्री की सलाह के पालन का निर्णय लिया। सोम् नामक एक अनुचर को बुलाकर राजा ने कहा, ''तुम मेरी उतनी प्रशंसा नहीं कर पा रहे हो, जितनी राम करता है। क्या कारण बता सकते हो?''

सोम ने बिना संकोच के कहा, ''प्रभु, मैं निस्वार्थ होकर आपके बारे में सच्ची बात कहने लगता हूँ तो राम मुझे रोकता है। स्वार्थ से प्रेरित होकर आपसे कुछ न कुछ पाने के उद्देश्य से वह आपकी अति प्रशंसा करने लगता है। जो बातें वास्तव में सच नहीं हैं, उन्हें भी बता-बताकर वह अपना उल्लू सीधा करता रहता है। हम दोनों में यही फ़र्क है।'' कहते हुए राम ने भी अपनी चंद इच्छाएँ जाहिर कीं। राजा समझ गये कि उसकी बातों में सचाई है। परंतु राजा को लगा कि ''यह भी तो मुझसे कुछ पाना चाहता है। फिर इन दोनों में फर्क ही क्या है?''

इसके बाद उन्होंने मंत्री से कहा, ''प्रशंसाएँ मुझे संतुष्ट करती हैं। मैं उन्हें सुनने का आदी हो गया हूँ। पर क्या कोई ऐसा व्यक्ति नहीं मिलेगा, जो निःस्वार्थ भाव से मेरी प्रशंसा करे?''

तब मंत्री मुक्तानंद को अपने गाँव के अतिशर्मा की याद आयी। वे पंडित थे। दूसरों की प्रशंसा करते रहना ही उनका काम था। पर इसके लिरए वे प्रतिफल की आशा नहीं करते थे। एक लंबे अर्से से उस गाँव का कोई भी निवासी उनकी प्रशंसा सुनने के लिए तैयार नहीं था। मुक्तानंद को हाल ही में मालूम हुआ कि प्रशंसा सुननेवालों की कमी उसे खटक रही है और इस कारण वह बहुत ही निराश है।

मुक्तानंद ने राजा से कहा, ''प्रभु, मेरे गाँव के अतिशर्मा को कुछ समय के लिए अपना अनुचर बना लीजिए। उन्हीं के साथ समय गुजारें। औरों को निकट आने न दें। आपकी इच्छा पूरी होगी और देश का भी कल्याण होगा।''

विशालसेन बड़ी ही उत्कंठा के साथ अतिशर्मा की बाट जोहने लगे। दो दिनों में अतिशर्मा आ पहुँचे। आते ही उन्होंने विशालसेन के रूप की सराहना की। उनके नाम की भूरि-भूरि प्रशंसा की। उनके परिधान की प्रशंसा की। उनकी पसंदों और नापसंदगियों की तारीफ़ की। उनकी हर चाल की प्रशंसा की।

राजा को उनकी प्रशंसाओं को सुनने के बाद ही ज्ञात हुआ कि उनमें इतने विशिष्ट गुण हैं। अब विशालसेन खुशी से फूले न समाये।

यों कुछ दिन बीत गये। अतिशर्मा हर रोज़

नयी-नयी प्रशंसाओं में राजा को डुबोने लगे। राजा छींकते भी तो अतिशर्मा उसकी तारीफ़ करने लगते। एक बार और छींकते तो अतिशर्मा कहते कि इस दूसरी छींक में कोई महत्वपूर्ण संदेश है। वे खांसते या हिचकी लेते तब भी वे उनकी प्रशंसा करते थे।

एक दिन राजा चिढ़ गये और उन्हें खूब दुत्कारा। तब भी अतिशर्मा ने उनकी शब्दावली की अति प्रशंसा की। इस पर राजा ने चकित होते हुए कहा, ''और कब तक आप मेरी प्रशंसा करते रहेंगे?''

''प्रभु, आप समस्त शास्त्रों में पारंगत हैं। सकल कला-कोविद हैं। आकाश में प्रकाशमान सूर्य नामक दीप भी किसी दिन बुझ सकता है। पर यह कब होगा, उसका अनुमान लगाना मुझ जैसे साधारण मनुष्य के बस की बात नहीं है। आपकी प्रशंसा करना भी वैसी ही बात है।'' अतिशर्मा ने भावुक होकर कहा।

यों एक महीना और बीत गया। एक दिन विशालसेन ने मंत्री मुक्तानंद से कहा, ''पता नहीं क्यों, प्रशंसाएँ सुनने में अब मुझे कोई रुचि नहीं रही। मुझे भय भी लगने लगा है। आप अतिशर्मा को तुरंत अपने गाँव भिजवा दें। उससे मैं खुद यह नहीं बता पा रहा हूँ।''

इस पर मुक्तानंद हँस पड़ा और बोला, ''प्रभु, अतिशर्मा महापंडित हैं। बड़ा पंडित होते हुए भी वह अपनी प्रशंसा खुद नहीं कर पाते। वे नहीं चाहते कि कोई दूसरा उनकी प्रशंसा करे, इसलिए स्वयं वे दूसरे की प्रशंसा करते रहते हैं। प्रशंसा पानेवाले की योग्यता की भी उन्हें परवाह नहीं। विवेकी भी कुछ समय बाद उनकी प्रशंसा से ऊब जाते हैं। वे प्रशंसा सुनते-सुनते थक जाते हैं। उनके कारण हमारे ग्रामवासी भी प्रशंसाओं से विरक्त हो गये हैं। इसी वजह से हमारा गाँव सुधर गया है। उस राजा से देश का भी उद्धार होगा, जो प्रशंसा से दूर रहते हैं।''

विशालसेन के मन में ज्ञानोदय हुआ। तब वे अतिशर्मा को उन लोगों के पास भेजने लगे, जो प्रशंसाएँ सुनने के इच्छुक थे। ऐसे लोगों की बीमारी को दूर करने में वे सफल होते गये। विदेह राज्य में उनके शासन-काल में बहुत प्रगति हुई।

समाचार झलक

ओह इतनी दूर !

रूस में नवीनतम जनगणना अक्तूबर ९ और १६ के मध्य की गई। सदा की भाँति हर घर में रहनेवालों की गिनती की गई। जन गणना अधिकारी सावधान थे कि कोई घर, कोई व्यक्ति न छूटे। दो व्यक्ति अन्तर्राष्ट्रीय अन्तरिक्ष स्टेशन पर थे। इसलिए यथा स्थान-जन-गणना के लिए जनगणनाकार के रूप में दो अन्तरिक्ष यात्री वहाँ भेजे गये जिन्होंने वेलेरी कोरसियून और सेरगे ट्रेसचेव से आवश्यक जानकारी एकत्र की तथा निर्धारित प्रपत्र पर, जिसे वे अपने साथ ले गये थे, उनके हस्ताक्षर लिये।

भारत का द्रुततम

अभी गोवा-मुम्बई एक्सप्रेस यात्रा में ८ घण्टे लेता है। बारह वर्ष पूर्व बने प्रतिष्ठित कोंकण रेलवे ने इन दो स्थानों के मध्य ४ घण्टे ३० मिनट में चलनेवाली रेलगाड़ी चलाने की सारी योजनाओं को अंतिम रूप दे दिया है।

यह रेल गाड़ी प्रति घंटा १५० कि.मी. की गति (भारत में द्रुततम) से चलेगी।

सम्प्रति, द्रुततम गति से चलनेवाली (१२० कि.मी. प्रति घंटा) गाड़ियाँ हैं दिल्ली और भोपाल के मध्य राजधानी और शताब्दी एक्सप्रेस।

गुप्त दान

कोठर गाँव का कलाधर करोड़पति था। वह सब प्रकार की समस्याओं से मुक्त था। उसका परिवार भी उसे पूरा सहयोग पहुँचाता था। कहा जाता है कि जहाँ धन की ज्यादती होती है, वहाँ अच्छाई नहीं होती। पर कलाधर उदार था, उसका हृदय विशाल था। किसी को कष्ट में देखता तो वह मदद करने में देर नहीं करता था।

राम कलाधर का ईमानदार सेवक था। अगर किसी को सहायता पहुँचानी होती तो कलाधर यह काम राम के द्वारा करवाता था। इस तरह कितने ही दुखी परिवारों का उद्धार कलाधर ने किया। ऐसे परिवारों को मालूम नहीं हो पाता था कि किसने उन्हें कष्टों से उबारा। इस विषय में राम बहुत ही सावधान रहता था और असली दाता का नाम गुप्त रखता था, क्योंकि कलाधर प्रशंसा व प्रचार से दूर रहता था।

पास ही के गाँव में कलाधर का साला भूषण रहता था। वह भी थोड़ा-बहुत दान करता रहता था, पर वह हमेशा इसी कोशिश में लगा रहता था कि लोगों में इसकी चर्चा हो और उसकी वाहवाही हो। दस रुपयों का ही दान सही, पर दस-पंद्रह लोगों की उपस्थिति में ही करता था।

भूषण को अपने बहनोई कलाधर का रवैया बिलकुल अच्छा नहीं लगता था। एक बार उसने कलाधर से कहा, ''इतना धन दान में दे रहे हो, पर कोई नहीं जानता कि दानी कौन है? बात छिपाने की क्या ज़रूरत है? तुम कोई बुरा काम नहीं कर रहे हो। ऐसे अच्छे काम जो करते हैं, उन्हें उंगलियों पर गिन सकते हैं।''

इसपर कलाधर ने मुस्कुराते हुए कहा, ''खुलकर दान देने से, दूसरों की प्रशंसा पाने से अहंकार पैदा हो जाता है। मुझे तो इस गुप्तदान

-निर्मला गुप्ता -

से ही संतृप्ति मिलती है। आत्मसंतृप्ति से बढ़कर कोई संपदा बड़ी नहीं होती। अहंकार एक दुर्बलता है। उससे दूर रहने में ही भलाई है।''

उसके इस जवाब से भूषण चिढ़ गया और बोला, ''तब तो मेरे गाँव के हमेशा रोते रहनेवाले दामोदर से परिचय कराना ही पड़ेगा।''

''वह दामोदर है कौन?'' कलाधर ने पूछा।

भूषण ने उसके बारे में यों बताया, ''यह दामोदर बूढ़ा है। उसका चेहरा हमेशा उदासी से भरा हुआ होता है। उसे देखने पर लगता है, मानों दुनिया की समस्त तकलीफ़ों को वह अपने कंधों पर ढो रहा हो। तुम सोने के सिक्कों से उसका कनकाभिषेक करा दो, तो भी उसके चेहरे पर खुशी नहीं देख पाओगे। वह किसी से यह नहीं बतायेगा कि फलाने ने मेरा कनकाभिषेक करवाया। तुम गुप्त दाता हो तो वह गुप्त याचक।''

भूषण की बातें कलाधर सुनता रहा, पर चुप रहा। दूसरे दिन उसने राम को साले का गाँव इसलिए जाने को कहा कि वह दामोदर के बारे में पूरी जानकारी प्राप्त करके लौटे।

राम उसी दिन शामको भूषण के गाँव गया। लौटने के बाद उसने दामोदर से संबंधित सारे विवरण कलाधर को दिये।

वृद्धावस्था में दामोदर की पत्नी मर गयी। उसके चार बेटे हैं। चारों की थोड़ी-बहुत जायदाद है। दामोदर अपने घर के पिछवाड़े के पशुओं की झोंपड़ी में रह रहा है। बेटों के खा लेने के बाद जो बच जाता है, उनकी बहुएँ उसकी थाली में डाल जाती हैं। पर दामोदर वह बचा-खुचा खाना नहीं खाता। वह उसे सानी के हौदे में

डाल देता है और दूसरों के दिये धन से भोजनालय से भोजन ले आता है। किसी को भी इस रहस्य का पता लगने नहीं देता।

दामोदर के बारे में पूरी जानकारी प्राप्त करने के बाद कलाधर ने राम को थोड़ी रक़म दी और उसे बताया कि उसके घर जाकर क्या करना है।

राम जब दामोदर के घर गया, तब उसके चारों बेटे घर ही में थे। राम ने उनसे कहा, ''यह बहुत पहले की बात है। मेरे पिता जब अपने बचपन में नदी में तैरने गये तब नदी के प्रवाह में बहते हुए जाने लगे। तब आपके पिता ने उन्हें बचाया। मरते समय मेरे पिता ने मुझसे यह घटना बतायी और कहा कि उनके प्राणदाता को कृतज्ञता के रूप में हर महीने एक निश्चित रक़म की व्यवस्था की जाए। और यह रक़म उनके जीवन-पर्यंत दी जाए। मुझसे उन्होंने इसका

वचन भी लिया। अब से हर महीने मैं आया करूँगा और आपके पिता को रक़म देता रहूँगा।''

यह जानकर दामोदर के बेटे खुशी के मारे उछल पड़े। वे दामोदर को पशुओं की झोंपड़ी से सादर ले आये और उससे कहा, ''पिताजी, अबसे आप यहीं रहेंगे और इसी खाट पर सोयेंगे।'' कहते हुए उन्हें खाट पर बिठाया और फिर कहा, ''अब से आप जो भी खाना चाहेंगे, खाइये। आपकी बहुएँ आपकी सेवा करने के लिए सदा तैयार रहेंगी। आपके पोते-पोतियाँ भी आपकी ज़रूरतों को पूरा करने में लगे रहेंगे।''

दामोदर की समझ में नहीं आया कि आख़िर बात क्या है, पर इतना तो समझ गया कि आज से वह आराम से रह सकता है और सारी तक़लीफ़ें दूर हो जायेंगी। राम ने लंबे अर्से के बाद उसके मुख पर खुशी देखी। वह तुरंत वहाँ से लौटा और यह बात कलाधर से बतायी।

उस समय भूषण भी वहाँ उपस्थित था। कलाधर ने उससे कहा, ''देखा, दामोदर को मैंने खुश कर दिया।'' भूषण ने नाराज़ होते हुए पूछा, ''जब तक दामोदर ज़िन्दा रहेगा, तब तक दान का यह सिलसिला चालू रहेगा?''

उसके इस सवाल पर कलाधर ने भूषण की पीठ थपथपाते हुए कहा, ''हम जलाशयों पर बाँध क्यों बँधवाते हैं? इसलिए कि हम पानी को सुरक्षित रखना चाहते हैं, जिससे ज़रूरत पड़ने पर उसका उपयोग किया जा सके। मेरे पुरखों ने इतनी जायदाद कमायी, उसे उपयोग में लाये बिना एक कोने में पड़े रहने दें तो इससे किसकी भलाई हो पायेगी! ऐसे अच्छे कामों के लिए हम यह संपदा उपयोग में ले आयें तो पुण्य भी मिलेगा, पुरुषार्थ भी। मैंने ठीक कहा न?''

''बहनोई जी, आपसे वाद-विवाद करना मेरे बस की बात नहीं है।'' कहता हुआ भूषण वहाँ से तुरंत जाने लगा।

साले के बरताव पर कलाधर ने ज़ोर से हँसते हुए कहा, ''देखो, दामोदर जैसा कोई ज़रूरतमंद दिखायी पड़े तो अवश्य मुझसे बताना।''
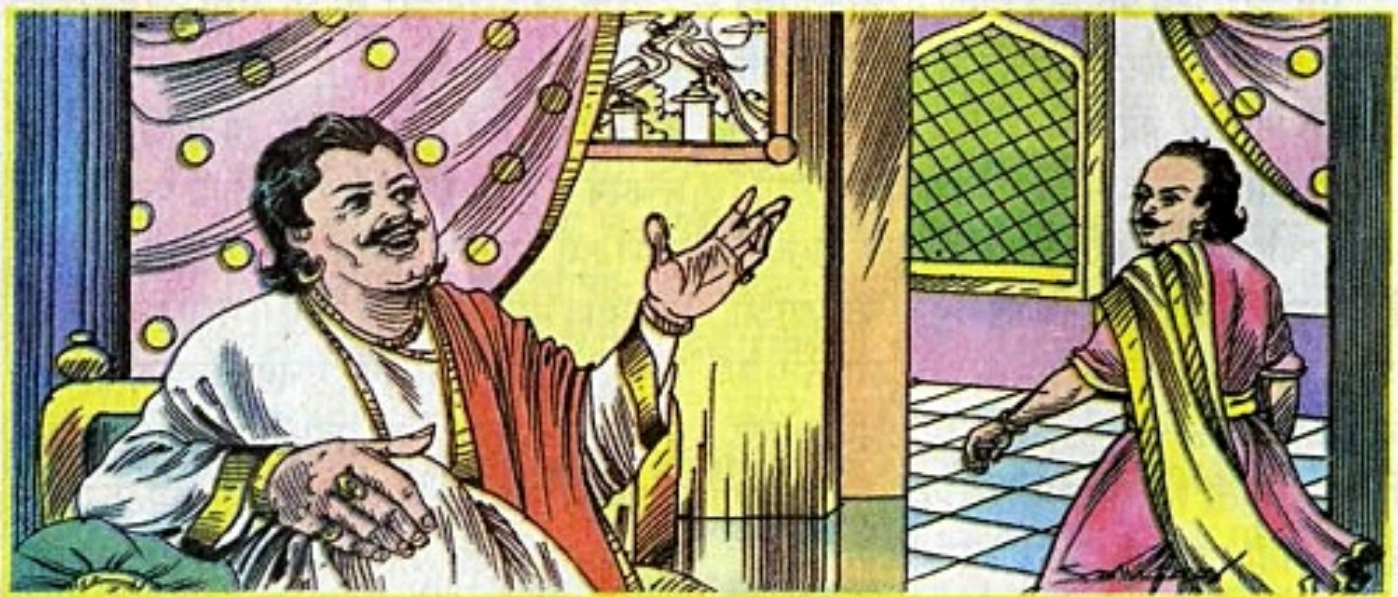
अपना भाग्य स्वयं बनाओ

तुम्पा एवं रत्नगिरि पड़ोसी राज्य थे। वे हमेशा एक दूसरे से लड़ते रहते थे। दोनों में से कोई हार मानने को तैयार न था। यह दोनों राजाओं के बीच मृत्यु पर्यन्त चलनेवाला युद्ध था। एक दिन तुम्पा के राजा को ख़बर मिली कि रत्नगिरि की सेना उस पर आक्रमंण करने आ रही है। तुम्पा के सेनापति वीरसेन अपनी छोटी-सी सेना के साथ शत्रु का सामना करने के लिए युद्धभूमि की ओर चल पड़ा। वह जानता था शत्रु की सेना के सामने उसकी सेना बहुत छोटी है। लेकिन कोई विकल्प नहीं था। युद्ध किये बिना आत्म-समर्पण करना सारे राज्य के लिए अपमानजनक बात थी। तुम्पा के स्वाभिमानी नागरिक इसे कभी पसन्द नहीं करते।

वीरसेन को मालूम था कि उसके सिपाहियों में आत्मविश्वास का अभाव है। उन्हें अपनी जीत पर संदेह था। वीरसेन ने उनकी परस्पर बातचीत में हतोत्साहित करनेवाली टिप्पणियाँ छिपकर सुनी थीं। उनके ढीले कन्धों और मुर्दनी चेहरों से निराशा स्पष्ट झलकती थी।

वीरसेन ने सोचा कि इनके नैतिक बल को बढ़ाने के लिए कुछ करना होगा।

मार्ग में उन्हें एक प्राचीन मंदिर मिला। मंदिर की देवी की प्रार्थना के बाद वीरसेन ने अपने सिपाहियों को संबोधित करते हुए कहा : "तुममें से अधिकांश समझते हो कि हम जीत नहीं सकते। क्यों नहीं हम देवी माता से मार्गदर्शन के लिए प्रार्थना करें?" फिर उसने चाँदी का एक सिक्का निकाला और कहा, "मैं सिक्के को उछालूँगा। यदि सिक्के का राजकीय चिह्न ऊपर हुआ तो समझेंगे कि देवी माता हमारी विजय का संकेत दे रही हैं। यदि वह चिह्न नीचे हुआ तो समझेंगे कि हमारी हार होगी। देखें, भाग्य का निर्णय क्या है?"

सिपाही वीरसेन को सिक्का उछालते हुए ध्यान से देख रहे थे। सिक्का जब नीचे गिरा तो सबने देखा कि राजकीय चिह्न चमक रहा है। वे खुशी से उछल पड़े। उनके लटकते कन्धे सीधे हो गये। उनमें आत्म-विश्वास जाग गया। वे दुगुने उत्साह और साहस के साथ रत्नगिरि की सेना पर टूट पड़े। शत्रु को धूल चाटनी पड़ी। युद्ध के पश्चात एक सेनाधिकारी ने टिप्पणी की, "भाग्य को कोई बदल नहीं सकता।"

"बिलकुल ठीक !" रहस्यमयी मुस्कान के साथ वीरसेन ने कहा और वह सिक्का दिखाया जिसे उसने मंदिर के निकट उछाला था। इसके दोनों ओर शाही चिह्न था।

आन्ध्र प्रदेश की एक लोक कथा

आश्चर्यों का खज़ाना आन्ध्र प्रदेश न केवल प्रकृति द्वारा समृद्ध बनाया गया है, बल्कि यह शिल्प-वैज्ञानिक ज्ञान से भी सम्पन्न है।

यहाँ की भूमि उपजाऊ है और कृषि के लिए अनुकूल है। इस राज्य में से होकर दो नदियाँ - गोदावरी और कृष्णा - बहती हैं। विस्तृत नहर प्रणालियों के साथ ये दोनों नदियाँ सिंचाई की सुविधा निश्चित रूप से प्रदान करती हैं। यह राज्य देश भर में चावल का सबसे बड़ा उत्पादक है।

इसका क्षेत्रफल २७६७५४ वर्ग किलोमीटर है और यह देश का पाँचवां सबसे बड़ा राज्य है। इसकी जनसंख्या ७५, ७२७, ५४१ है। यह १ नवम्बर १९५६ को अस्तित्व में आया।

इसके पूरब में बंगाल की खाड़ी, पश्चिम में कर्नाटक, उत्तर में महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़ और उड़ीसा तथा दक्षिण में तमिलनाडु है। इसका समुद्रतट ९७२ कि.मी. लम्बा है जो देश भर में सबसे लम्बा है।

इसकी राजधानी हैदराबाद में है और इसकी राजकीय भाषा तेलुगु है। यहाँ बोली जानेवाली अन्य भाषाएँ अंग्रेज़ी, हिन्दी तथा उर्दू हैं।

मूल्यवान परामर्श

वरंगल का राजा प्रतापरुद्र् अपने पुत्र रामलिंग से निराश था। वह इतना कोमल और भद्र था कि राजा नहीं बन सकता था। ''यह सब तुम्हारे कारण हुआ?'' राजा ने रानी नारायणम्मा से कहा। ''तुमने उसे बिगाड़ दिया। एक राजा को कठोर होना चाहिए। उसे कठिन निर्णय लेने पड़ते हैं। लेकिन यह माँ का लाड़ला वैसा नहीं कर सकता।''

रानी नारायणम्मा इससे सहमत नहीं थी। ''केवल एक भद्र राजा प्रजा की पीड़ा को समझ सकता है।'' वह तर्क देती थी। ''लेकिन यदि आप चाहते हैं कि वह कठोर बने जो उसे प्रजा से मिलने के लिए राज्य में भेज दीजिए।''

राजा को यह विचार अच्छा लगा। उसने रामलिंग को कहा, ''बेटा! शीघ्र ही तुम्हें राज्य का शासन-भार संभालना होगा। लेकिन इसके पूर्व, मैं चाहता हूँ कि तुम सांसारिक तौर-तरीके सीखो। तुम्हें प्रजा के बीच जाकर अपने अनुभव से कुछ सीखना चाहिए।''

इसलिए रामलिंग घोड़े पर सवार हो नगर की ओर चल पड़ा। जब वह मध्याह्न में आराम करने के लिए रुका, तो उसने एक झोंपड़ी से कुछ ऊँची आवाजें सुनीं।

''मंदिर के पुजारी के रूप में मैं जो कुछ कमाता हूँ, वह सबकुछ मैंने तुम्हें दे दिया है। अब मेरे पास कुछ नहीं है। तुम्हें इतने में ही यथासंभव गुजारा कर लेना चाहिए।'' एक पुरुष की आवाज ने कहा।

''तुम्हारा वेतन ठीक हमारे खाने भर ही होता है।'' एक स्त्री की आवाज ने कहा। ''लेकिन अब माँ बीमार है और उसे दवा की आवश्यकता है। हमें कुछ और पैसों की जरूरत है।''

पुरुष ने दुख प्रकट करते हुए कहा, ''अब मेरे पास पैसे नहीं हैं। लेकिन मैं तुम्हें विवेकपूर्ण परामर्श की कुछ पंक्तियाँ लिखकर दे सकता हूँ। यदि तुम इन्हें बेच सको तो एक लाख स्वर्ण मुद्रा तक कमा सकते हो। इससे हमारी सारी आवश्यकताएँ पूरी हो जायेंगी।''

''विवेक कौन खरीदेगा?'' स्त्री ने आह भर कर कहा। लेकिन पुजारी ने छाल पर कुछ लिखकर स्त्री को देते हुए कहा, ''जाओ, इसे बेचो!''

राजकुमार इस गरीब दम्पति की सहायता करना चाहता था। इसलिए जैसे ही स्त्री बाहर आई, उसने स्त्री के पास आकर कहा, ''माँ, क्या तुम मेरी सहायता कर सकती हो? मैं कुछ परामर्श चाहता हूँ।''

स्त्री ने उसे आशा भरी दृष्टि से देखा। ''मेरे पास एक छाल के टुकड़े पर विवेकपूर्ण परामर्श की तीन पंक्तियाँ हैं।'' उसने कहा। ''लेकिन इनका मूल्य एक लाख स्वर्ण मुद्राएँ हैं।''

राजकुमार ने परामर्श की छाल ले ली और उसे हीरे की अपनी अंगूठी दे दी। ''यह एक लाख स्वर्ण मुद्राओं से भी अधिक मूल्यवान है।'' उसने कहा।

फिर उसने छाल को पढ़ा। उसमें लिखा था :

यदि तुम्हें अनजान स्थान पर रात भर ठहरना पड़े तो कभी न सोना, क्योंकि तब शायद कभी न जाग सको!

यदि समृद्ध संबंधी से शान-बान के साथ

कला और दस्तकारी

आन्ध्र प्रदेश के शासकों ने कला और दस्तकारी की विविध शैलियों को सदा संरक्षण दिया है। यह राज्य के सबसे अधिक प्रसिद्ध हस्तकलाओं में से एक - कलमकारी - का उत्पतिस्थान रहा है। यह कपड़े पर छपाई की एक दुर्लभ कला है। यह कलम या पंख की कलम से किया जाता है। इसके लिए केवल सब्जियों के रंग का प्रयोग किया जाता है। विषय वस्तु महाकाव्यों से ली जाती है। कलमकारी अब भित्ति-लटकन, चादर तथा पोशाक के वस्त्र के रूप में उपलब्ध है। इस हस्तकला का कार्य मुख्यतः श्रीकलाहस्ती में किया जाता है।

एक अन्य प्रसिद्ध हस्तकला है - कोंडापल्ली गुड़िया। देखने में सामान्य लगनेवाली यह गुड़िया राज्य में उपलब्ध मुलायम लकड़ी से बनायी जाती है। इन काष्ठ-मूर्तियों को चमकीले रंगों से रँगा जाता है।

हैदराबाद अपने मोतियों और चूड़ियों के लिए बहुत प्रसिद्ध है। काँच की चूड़ियाँ विविध रंगों और आश्चर्यजनक किस्मों में पायी जाती हैं। इन चूड़ियों की रूपरेखा हाथ से बनायी जाती है। हैदराबाद के हस्तशिल्पी मोतियों को तैयार करने और उसकी रूपरेखा बनाने की कला के लिए प्रसिद्ध हैं। राज्य में धातु के बने बर्तन भी बहुत लोकप्रिय हैं।

मिलने जाओ तब तुम्हारा भव्य स्वागत होगा, क्योंकि तुम उनके लिए उपहार लेकर जाओगे। परंतु गरीब के समान उनसे मिलने जाओ तो तुम्हें बाहर निकाल दिया जायेगा, क्योंकि कोई धनी व्यक्ति अपने गरीब संबंधी को रखना नहीं चाहता।

यदि कोई कार्य कठिन लगे और खतरों से भरा हो तो निर्भय होकर उसे करो और उसमें अपनी पूरी शक्ति लगा दो।

राजकुमार ने इसे सावधानीपूर्वक अपने पास रख दिया। कुछ दिनों के बाद राजा ने अपने पास बुलाकर पूछा, ''तुम अब तक क्या करते रहे हो? मैं यह जानने के लिए उत्सुक हूँ कि तुम व्यावहारिक बने हो या नहीं?''

''अवश्य पिताजी।'' राजकुमार ने उत्तर दिया। ''मैंने बहुत सारा ज्ञान खरीदा है।'' ''ज्ञान खरीदा है!'' राजा प्रतापरुद्र चकित था।

रामलिंग ने उसे छाल के विषय में बताया। लेकिन इस पर वे क्रोधित हो उठे। ''मूर्ख!'' वे चिल्लाये। ज्ञान बेचकर किसी ने तुम्हें मूर्ख बनाया है। तुम कैसा राजा बनोगे? मेरी नजर से दूर हट जाओ और फिर कभी अपना मुख न दिखाओ।''

उदास होकर रामलिंग वहाँ से चला गया। वह घोड़े पर सवार हो अपने राज्य से बाहर चला गया।

रात होते-होते वह एक छोटे नगर में पहुँचा। उसने एक यात्री निवास में रात बिताने का निश्चय किया। जैसे ही उसने वहाँ प्रवेश किया, गृह व्यवस्थापक ने उसे एड़ी से चोटी तक देखा। उसकी नजर उसकी ज़रीदार पोशाक और उसके आभूषणों पर पड़ी। उसके मन में एक दुर्विचार आया, ''क्यों न इसे आज रात मारकर इसके आभूषण ले लूँ?''

उसने राजकुमार का स्वागत किया और उसे अपने सर्वोत्तम कमरे में ठहराया। रामलिंग को जब नींद आ रही थी तभी उसने छाल के परामर्श पर ध्यान दिया। उसने उसे फिर पढ़ा : **यदि तुम किसी अपरिचित स्थान पर ठहरो, तो कभी न सोना, क्योंकि हो सकता है तुम फिर कभी न जाग सको।**

राजकुमार ने इस परामर्श का पालन करने का निश्चय किया। उसने अपने चेहरे पर पानी की छींटें मारीं और सावधान बैठा रहा। आधी रात के तुरंत पश्चात गृह व्यवस्थापक हाथ में तलवार लिए छिपकर कमरे में आया। राजकुमार ने उसे रंगे हाथों पकड़ लिया। भौचक्का होकर वह आदमी राजकुमार के पाँव पर गिरकर क्षमा माँगने लगा। राजकुमार ने उसे क्षमा कर दिया और दूसरे दिन नगर छोड़कर चला गया।

शीघ्र ही वह अपने चाचा के राज्य में पहुँचा। घर छोड़े हुए रामलिंग को कई सप्ताह बीत गये। हमेशा यात्रा करते रहने के कारण उसके वस्त्र मैले-कुचैले हो गये थे। इसलिए जब वह राजा के दरबार में गया तब उसके चाचा ने उसे पहचाना तक नहीं। ''तुम? मेरा भतीजा? रक्षक, इस बदमाश को बाहर निकाल दो।'' उसके चाचा ने कहा।

जब वह बाहर निकल रहा था, रामलिंग को दूसरा परामर्श याद आया : **जब तुम धनी संबंधी के पास शान-बान से जाओ तो तुम्हारा शानदार स्वागत होगा। किंतु गरीब के समान जाओ तो तुम्हें बाहर निकाल दिया जायेगा, क्योंकि कोई धनी व्यक्ति अपने गरीब संबंधीयों को रखना नहीं चाहता।**

राजकुमार ने इन शब्दों की सचाई को अनुभव किया। उसने अपने कुछ आभूषणों को बंधक पर रखकर कुछ पैसे लिये और नये कपड़े खरीदे। फिर एक सराय में जाकर अपने को सजाया संवारा। अब वह पुराने जमाने का राजकुमार दिखाई पड़ने लगा। उसने अपने चाचा के लिए कुछ उपहार खरीदे और फिर दरबार में पहुँचा। इस बार उसके चाचा ने पहचान लिया और सरगर्मी के साथ उसका स्वागत किया। वहाँ कुछ दिनों तक ठहरने

बालाजी मंदिर

शताब्दियों से तिरुपति तीर्थ यात्रियों का गन्तव्य रहा है। तिरुमला कलियुग के देवता श्रीवेंकटेश्वर का निवास है, जो बालाजी के नाम से लोकप्रिय हैं।

तिरुमला पूर्वी घाट की नल्लुमलई पर्वतमाला में सप्तगिरि समूह की चोटी पर स्थित है। यहाँ के अधिष्ठातृ देव को सप्तगिरि स्वामी के नाम से भी जाना जाता है। मंदिर का इतिहास रहस्यमय है, लेकिन इसे पल्लव, चोला, पांडया, विजयनगर के शासकों और मैसूर के राजा का संरक्षण प्राप्त था। मुख्य मंदिर दक्षिण भारतीय मंदिर वास्तुकला का उत्कृष्ट उदाहरण है। परम पावन मंदिर गर्भ के ऊपर विमानम और ध्वजा स्तम्भम सोने की चादर से जटित हैं।

के बाद रामलिंग वहाँ से आगे चला गया। वह एक छोटे शहर में रुका, जहाँ उसने एक गली में एक कुम्भकार को रोते हुए देखा। "तुम क्यों रो रहे हो?" राजकुमार ने उससे पूछा।

"मेरे बेटे की शादी राजकुमारी से होनेवाली है।" उस आदमी ने विलखते हुए कहा।

"लेकिन यह तो निश्चय ही खुशी की बात है? है न?" राजकुमार ने विस्मयपूर्वक कहा।

"ओह नहीं!" वह रोने लगा। "इस राज्य में राजकुमारी हर रोज शादी करती है और हर शादी की रात उसका पति रहस्यमय ढंग से मर जाता है। अब मेरे बेटे की बारी है। मैं जानता हूँ, वह जीवित नहीं लौटेगा।"

राजकुमार को तीसरे परामर्श की स्मृति हो आई। यदि कोई कार्य कठिन लगे और खतरों से भरा हो तो निर्भय होकर करो और उसमें पूरी शक्ति लगा दो।

उसने महसूस किया कि कुम्भकार के बेटे को बचाना उसका फर्ज है। "राजकुमारी से मुझे विवाह करने दो।" उसने प्रस्ताव रखा। कुम्भकार राजी हो गया और सुंदर राजकुमारी का विवाह रामलिंग से हो गया। उस रात जब राजकुमारी सो रही थी, रामलिंग सावधान होकर जाग रहा था।

आधी रात को पलंग के नीचे से दो सर्प

निकलकर पलंग के खम्भों के ऊपर चढ़ने लगे। राजकुमार सावधान था। उसने दोनों सर्पों को मार दिया। जब उसने यह पता करने के लिए कि वे किधर से आये इधर-उधर देखा तो पलंग के नीचे उसे साँप का एक बिल मिला।

दूसरे दिन प्रात:काल राजा को अपने दामाद को जीवित देखकर आश्चर्य हुआ। रामलिंग ने समझाया, ''जब यह महल निर्मित हुआ था तो साँप का कोई बिल नष्ट हो गया होगा। हो सकता है, कोई साँप भी मर गया हो ! ये दोनों सर्प उसका बदला ले रहे थे। अब हमलोग उस संकट से मुक्त हो गये हैं।'' राजा यह सुनकर बहुत प्रसन्न हुआ।

जब राजा को यह मालूम हुआ कि रामलिंग राजकुमार है तब वह और भी प्रफुल्लित हुआ। उसने युवा दम्पति को उनके अपने राज्य में भेज दिया, जहाँ राजा और रानी इन्हें देखकर गद्‌गद्‌ हो उठे। रामलिंग की कहानी सुनने के पश्चात उसके पिता ने यह स्वीकार कर लिया कि ''जो ज्ञान तुमने खरीदा, उसने वास्तव में तुम्हें वीर और बुद्धिमान बना दिया है।''

दर्शनीय स्थान

तीर्थ-पर्यटन के अतिरिक्त आन्ध्रप्रदेश में पर्यटकों के देखने के लिए काफी कुछ है। भारत के पाँचवें सबसे बड़े नगर हैदराबाद में ऐतिहासिक महत्व के अनेक स्मारक हैं। जैसे चारमीनार, गोलकुण्ड, सालारजंग अजायबघर तथा ओसमानिया विश्वविद्यालय आदि। यहाँ की राजधानी वास्तव में हैदराबाद और सिकन्दराबाद का जुडवाँ शहर है जो हुसैन सागर से जुड़े हुए हैं।

विशाखापतनम पर्यटकों का एक अन्य गन्तव्य है। यहाँ का समुद्र तट यात्रियों से भरा होता है। यह अन्य दर्शनीय स्थलों जैसे आरकू घाटी, टायडा कैम्प तथा बोरा गुफाओं तक जाने का पड़ाव है।

आन्ध्र प्रदेश के अन्य दर्शनीय स्थान हैं - नागार्जुन सागर, भद्राचलम, लिपाक्षी, मंत्रालयम, पुट्टापरती, अमरावती तथा इतिपोतला जलप्रपात।

अपने भारत को जानो

जनवरी महीने में २६ जनवरी को गणतंत्र दिवस का परेड सबसे महत्वपूर्ण घटना है। परेड में देश की उपलब्धियों का तथा शिल्प-वैज्ञानिक विकास, उद्योग, वाणिज्य, कृषि, स्वास्थ्य एवं शिक्षा जैसे क्षेत्रों में हुई प्रगति का प्रदर्शन किया जाता है। इस माह की प्रश्नोत्तरी, भारत कितना विकास कर रहा है, इस संबंध में आपकी जानकारी का जायजा लेगी।

१. हमारी वर्तमान आण्विक-शक्ति-उत्पादन-क्षमता क्या है?

२. भारत ने किस वर्ष इनसैट-आई.बी. उपग्रह को सफलतापूर्वक छोड़ा था?

३. अनेक विशालतम और आधुनिकतम समुद्र-वैज्ञानिक अनुसंधान पोतों में से एक पोत-'सागर कन्या' भारत के पास है। इसे हम लोगों ने किस देश से प्राप्त किया है?

४. भारत के प्रथम जमीन से जमीन पर मार करनेवाले प्रक्षेपणास्त्र का नाम क्या है?

५. भारत ने एक पुरुष और एक महिला को अन्तरिक्ष में भेजा है। उन्होंने कब अन्तरिक्ष की यात्रा की?

६. भारत ने कब दशमलव सिक्का प्रणाली अपनाई?

७. विश्व विद्यालय अनुदान आयोग की स्थापना कब हुई?

८. भारत का प्रथम गगन-चुम्बी भवन कहाँ और किस वर्ष निर्मित किया गया?

(उत्तर अगले महीने)

दिसम्बर २००२ प्रश्नोत्तरी के उत्तर

१. बिड़ला भवन में प्रार्थना सभा के मंच के निकट एक बम-विस्फोट हुआ।

२. ले.ज.के.एम. करियप्पा प्रथम भारतीय प्रधान सेनापति बने।

३. ७४ दलें, १४ राष्ट्रीय दलें थीं।

४. सी.डी. देशमुख - छः बार।

५. प्रयाग में फरवरी १९५४। लगभग ५०० लोगों की जानें गईं।

६. १९५४ - डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन, सी. राजागोपालाचारी, सी.वी. रामन।

७. सचिन नाग, १०० मी. फ्री स्टाइल तैराकी में।

८. बम्बई (अब मुम्बई) के महा धर्माध्यक्ष वलेरियन ग्रैशिया - १२ जनवरी १९५३.

९. मध्य भारत - इन्दौर।

१०. श्री रमण महर्षि तथा श्री अरविन्द।

विघ्नेश्वर

कृष्ण की बातें सुनकर मृदंग केसरी हँस पड़ा और बोला, ''ओह, अपने को साधारण बताकर बचना चाहते हो? ऐसा कभी नहीं हो सकता। अभी इस बात का फ़ैसला हो जाना चाहिए कि तुम्हारा वेणुगान श्रेष्ठ है या मेरा मृदंग वाद्य?''

कृष्ण ने काँपते हुए हाथों से मुरली को निकाला, तब मृदंग केसरी मृदंग बजाने लगा। श्री कृष्ण ने यमुना कल्याणी राग बजाकर मृदंग केसरी को चकित कर दिया और झट राग बदलकर हंसध्वनि राग का आलाप करने लगे। इस पर मृदंग केसरी एकदम उल्लास से भर उठा और अपने को भूलकर मृदंग बजाना छोड़ दिल खोलकर नाचने लगा।

कृष्ण जब चित्र-विचित्र गतियों के साथ विभिन्न स्वरों में हंसध्वनि राग का आलाप करते गये, तब मृदंग केसरी का रूप बदलकर विघ्नेश्वर अपनी सूंड उठाये तोंद हिलाते तांडव नृत्य करने लगे। उस समय उनका मृदंग गायब हो गया और उसकी जगह चूहा उछल-कूद करने लगा।

विघ्नेश्वर के लिए हंसध्वनि राग बहुत ही प्यारा था। उस राग को सुनकर वे पुलकित हो उठे। उस ख़ुशी में तांडव नृत्य करते-करते वे थक गये। श्री कृष्ण ने हठात् अपना मुरली-वादन बंद कर दिया और विघ्नेश्वर को गिरते देख थामकर कहा, ''पार्वतीनंदन, यह सोचकर डर के मारे मैंने आपको थाम लिया है कि आप औंधे मुँह गिर जायेंगे तो शायद आपकी माता मुरली गान सुनने से आप पर रोक लगाते हुए कहीं शाप न दे बैठें। इसलिए हे

लंबोदर, बुरा मत मानियेगा।'' ''हे कृष्ण, मैं आपका मुरली वादन सुनने के लिए ही यहाँ पर आया हूँ। हमारा कृष्ण-विनायकीय सचमुच ही सुंदर कांड है।'' विघ्नेश्वर ने कहा।

''विघ्नेश्वर, आपके बेचारे वाहन पर मृदंग की थापें खूब पड़ीं।'' यों कहते कृष्ण ने चूहे को प्यार से निहारा।

''कृष्ण ! कंस का अंतिम समय निकट आ गया है। वह धनुर्याग के बहाने आपको लिवा जाने के लिए अक्रूर को भेजेगा ! विजयी होकर लौटिये।'' विघ्नेश्वर ने कहा।

''यह सब आपकी कृपा है।'' यों कहते कृष्ण ने हाथ जोड़कर विघ्नेश्वर को प्रणाम किया।

इस पर विघ्नेश्वर बोले, ''आप तो अवतार पुरुष हैं। यह सब मेरी कृपा नहीं, आपकी लीला है। हाँ, अर्क इस समय कुब्जा के रूप में आपका इंतजार करती होगी। उस पर अनुग्रह कीजिए।'' यों कहकर वे चूहे पर सवार हो आसमान में उड़कर अंतर्धान हो गये।

इसके बाद अक्रूर कृष्ण-बलराम को रथ पर मथुरा पुरी में ले गया। टेढ़े शरीर वाली कुब्जा कृष्ण के सामने आई, उसने उनके चरणों पर चन्दन लगाकर प्रणाम किया, फिर कृष्ण और बलराम के कंठों में फूल मालाएँ पहना दीं। इस पर कृष्ण ने कुब्जा को अपने दोनों हाथों से उठाया, तब वह कुब्जा-रूप से मुक्त हो अप्सरा के रूप में बदलकर देवलोक चली गई।

कंस ने कृष्ण का संहार करने के लिए जो कपट और माया जाल रचे, उन सबको विफल बनाकर कृष्ण ने कंस को सिंहासन पर से नीचे खींच लिया, और उसका वध कर दिया।

देवकी और वसुदेव के साथ उग्रसेन को भी कारागार से मुक्त करके उन्हें मथुरा के सिंहासन पर बिठाया।

कृष्ण और बलराम बड़े हो गये। कृष्ण ने कई दुष्टों और राक्षसों का संहार किया, समुद्र के जल को दूर तक हटा ले जाकर शत्रु के लिए दुर्भेद्य रहने लायक़ द्वारका नगर का निर्माण किया और अपने भाई बलराम को यादवों का नायक बनाया।

इसके बाद कृष्ण ने रुक्मिणी को उठा लाकर उसके साथ विवाह किया। समस्त संपदाओं से वैभवपूर्ण होकर भी कृष्ण पहले की भांति गायें चराते, गायों का दूध दुहते गोपालकृष्ण के रूप में ही द्वारका में रहने लगे।

द्वारका नगर के निकट सत्राजित नामक एक प्रमुख व्यक्ति राजा की तरह अपना एक छोटा-सा राज्य स्थापित कर सुखमय जीवन बिता रहा था। वह अपने को अभिमान पूर्वक सूर्यवंशी क्षत्रिय बताते हुए सूर्य को प्रसन्न करने के लिए भयंकर तपस्या करने लगा। उस पर प्रसन्न हो सूर्य ने शमंतकमणि नामक एक बहुत बड़ा रत्न उसे दे दिया। शमंतकमणि से छूटने वाली काँति की किरणें स्वर्ण कणिकाएँ बनकर उसे प्रतिदिन अपार सोना देने लगीं।

सत्राजित प्रमुख व्यक्तियों को निमंत्रण देकर उन्हें बुलवा लेता, उन्हें मणि दिखाकर अपने प्रभाव का परिचय दे फूला न समाता था। कृष्ण के पास भी उसने निमंत्रण भेजा, पर वे न गये। उन्होंने बस, यही कहला भेजा कि कभी फुरसत पाने पर जरूर आयेंगे। घमण्डी सत्राजित कृष्ण के प्रति ईर्ष्या करने लगा। वैसे उसने कृष्ण के बारे में कई अद्‌भुत बातें सुनीं, फ़िर भी उन्हें सिर्फ़ एक प्रमुख यादव के रूप में मानता था, इससे बढ़कर कृष्ण को कोई ऊँचा स्थान नहीं दिया।

सत्राजित की सत्यभामा नामक एक अपूर्व रूपवती पुत्री थी। शमंतकमणि के साथ सत्यभामा का सौंदर्य भी विशेष रूप से विख्यात था। जरासंध जैसे महान वीर भी सत्यभामा को पाने की आशा करने लगे।

विघ्नेश्वर के प्रति सत्यभामा के मन में अपार श्रद्धा व भक्ति थी। वह हर विनायक चतुर्थी के दिन भक्ति और श्रद्धा के साथ विघ्नेश्वर की पूजा

करके उनसे यही कामना करती कि कृष्ण को उसके अधीन बनां दें। कृष्ण को कभी उस मार्ग से होकर निकलते वक़्त अपने महल के ऊपर खड़े हो उन्हें ताकती रहती, पर कृष्ण उसकी ओर आँख उठाकर नहीं देखते। इस पर निराश हो सत्यभामा विघ्नेश्वर के सामने घुटने टेक ध्यान करती कि वे उसकी मनोकामना की पूर्ति करें।

सत्राजित अपनी पुत्री के हृदय को जानता था, फिर भी वह ऐसा अभिनय करता, मानो जानता ही न हो। एक दिन सत्यभामा को विघ्नेश्वर के सामने घुटने टेके हुए देख सत्राजित बोला, ''बेटी, जब सूर्य भगवान का अनुग्रह हम पर है, तब ऐसी मनौतियों की क्या ज़रूरत है?''

इस पर सत्यभामा झट उठ खड़ी हुई और बोली, ''पिताजी, ऐसा न कहिये! मनोकामना को सफल बनानेवाले देवता विघ्नेश्वर अकेले ही हैं!''

"अगर यह बात पूछते तो मैं ज़्यादा फ़िक्र नहीं करता। जानती हो, उसने क्या पूछा? शमंतक मणि की माँग की। यह भी कहा कि वह मणि अगर उसके जैसे व्यक्ति के हाथ रहे तो सारी जनता के हित के काम में आ सकता है।" सत्राजित ने जवाब दिया।

सत्यभामा रुष्ट होकर बोली, "पिताजी, मुझसे भी बढ़कर यह शमंतक मणि आपके लिए प्यारा है?" यों कहकर वह तेजी के साथ जाने को हुई, तब सत्राजित उसे समझाने के स्वर में बोला, "ऐसा मत सोचो, बेटी ! मैं कृष्ण के लालच पर चकित हूँ, बस !"

"तुम्हारी मनोकामना क्या है? रुक्मिणी के साथ हिस्सा बाँट लेना ही है न?" सत्राजित ने पूछा।

"हिस्सा बाँटना कैसे? कृष्ण को मैं अपने अधीन रखूँगी।" सत्यभामा ने जवाब दिया।

सत्यभामा के हठ को सत्राजित अच्छी तरह जानता था। फिर भी उसे भोली-भाली मानकर चुप रह जाता था।

दूसरे दिन ही कृष्ण सत्राजित के पास आये। कृष्ण को आकृष्ट करने के लिए सत्यभामा अपने को अलंकृत कर ख़ुशी के साथ सभा भवन में पहुँची। तब तक कृष्ण वहाँ से चले गये थे।

सत्राजित शाम तक मणि को मुट्ठी में लिये कृष्ण की दिशा में देखते उदास खड़ा रहा। इस पर सत्यभामा ने अपने पिता से पूछा, "पिताजी, आप उदास क्यों हैं? क्या उस आगंतुक सज्जन ने आपसे मेरी माँग नहीं की?"

"उन्होंने तो यह नहीं कहा कि मणि के द्वारा प्राप्त होनेवाले सोने को वे छिपाकर रखेंगे। ऐसी हालत में वह लालच कैसे हो सकता है? पिताजी, कृष्ण जैसे महानुभाव के माँगने पर ख़ुशी के साथ वह मणि उनको दे देते तो क्या ही अच्छा होता !" सत्यभामा ने कहा।

सत्राजित क्रोध के मारे काँपते हुए गरज उठा, "नहीं दूँगा ! मेरे प्राणों के रहते कोई भी इस मणि को ले नहीं सकता ! यह मणि मेरे लिए प्राण के समान है ! मेरा सर्वस्व है !"

सत्यभामा का चेहरा लाल हो उठा, "हाँ, मणि आपके लिए सब कुछ है ! मुझसे कहीं ज्यादा प्यारा है ! कृष्ण को ही साबित करना होगा कि यह शमंतकमणि प्यारा है या मैं ज़्यादा प्यारी हूँ।" यों कहते तीक्ष्ण दृष्टि डालकर चली गई। इसके थोड़े दिन बाद विनायक चतुर्थी आ

पड़ी। सत्यभामा यथा प्रकार विघ्नेश्वर की पूजा करके उस दिन शामको पालकी में द्वारका नगर के लिए चल पड़ी।

उस शामको आसमान में घना अंधेरा छा गया। कृष्ण गाय का दूध दुह रहे थे। अचानक अंधेरा फट गया, चौथ की चांदनी दूध में चकाचौंध के साथ प्रतिबिंबित हुई। कृष्ण को चंद्रमा का प्रतिबिंब दिखाई दिया, फिर दूसरे ही क्षण गहरा अंधकार फैलते ही चन्द्रमा अचानक गायब हो गया।

विनायक चतुर्थी के दिन चन्द्रमा को देख कृष्ण व्याकुल हो उठे, पूजा के मंदिर में जाकर अपने सर पर अक्षत डाल लिये, तब विघ्नेश्वर के सामने खड़े हो आँखें बंदकर बोले, ''हे देव, मैंने प्रतिबिंब को सही देख लिया है ! फिर आपकी जैसी कृपा !''

कृष्ण ध्यान में मग्न थे, तभी उन्हें विघ्नेश्वर की मूर्ति में से ये शब्द सुनाई दिये, ''हे कृष्ण, आपने अपनी इच्छा से नहीं देखा, आप पर दोषारोपण होने पर भी वह ऐसे ही दूर होगा, जैसे अचानक अंधेरा छंट जाता है ! समझ लीजिए कि यह सब आपकी भलाई के लिए ही हुआ है !''

इस पर कृष्ण ने आँखें खोलकर कहा, ''देव, यह सब आपकी लीला है !''

उसी समय रुक्मिणी पूजा के मंदिर में प्रवेश करते हुए विघ्नेश्वर के सामने खड़े हो जप करनेवाले कृष्ण को देख चकित रह गई। तब धीरे से बोली, ''श्रीमानजी, आप तो विघ्नेश्वरजी के साथ कोई वार्तालाप करते मालूम होते हैं !''

कृष्ण ने जवाब दिया, ''इसी समय किसी विनायक चतुर्थी के दिन मुझे पालने वाली यशोदा माई से मैंने जो बातें कही थीं, वे आज मुझे याद हो आईं। बस ! यही बात है !''

"स्वामिन, वे तुतली-प्यारी बातें मुझे भी सुनाइये !" रुक्मिणी ने पूछा।

कृष्ण बोले, "यशोदा माई चतुर्थी के दिन जो दूध दुह रही थीं, उसमें मैंने चन्द्रमा के प्रतबिंब को देख किलकारे मारे थे। उस समय यशोदा माई यह कहते दुखी हो उठी, "बेटा, न मालूम तुम पर कितने दोषारोप होंगे। यह भी कहा था कि मेरे बड़े होने के बाद भी मैं इन आरोपों से बच नहीं सकूँगा। इसके जवाब में मैंने कहा था, "माँ, तब तो फिर से मुझे दूध में चन्द्रमा के प्रतिबिंब को देखना है न ! वरना मुझ पर दोषारोप कैसे हो सकता है?"

"तब तो बताइये, उस वक़्त दोषारोपण की बात क्या थी?" रुक्मिणी ने पूछा। "दाऊ बलराम ने कहा था कि मैं मिट्टी खाता हूँ !"

"तो फिर अब आपने चन्द्रमा को नहीं देखा है न? आप देखना भी चाहें तो दिखाई न देंगे ! खूब घना अंधेरा छाया हुआ है!... हाँ, मैं कहना भूल गई कि सत्राजितजी के घर की मणि हमारे घर आ गई है !" रुक्मिणी बोली।

"शमंतकमणि का हमारे घर आना कैसे?" कृष्ण ने आश्चर्य के साथ पूछा।

"ओह, वह मणि नहीं; सत्राजित की कन्यामणि ! सत्यभामा मणि आई हुई है ! हम दोनों बड़ी देर तक यहीं पर बात करती रहीं, आपका इंतजार करते-करते थककर वह चली गई। मैं उसको विदा करके इधर चली आई, बस, तभी आप दिखाई दिये !" रुक्मिणी ने कहा।

कृष्ण ने सिर हिलाकर कहा, "ओह, ऐसी बात है ! हमारे घर के विघ्नेश्वर देव को देखने के ख्याल से आई होगी! देख लिया है न !"

रुक्मिणी ने कहा, "मैं नहीं जानती कि विघ्नेश्वर देव को देखने आई थी या आपकी नज़र में पड़ने के लिए ! लेकिन मैं निश्चित रूप से कह सकती हूँ कि उसकी आँखें आपको ढूँढ़-ढूँढ़कर थक गई थीं !"

"उफ़ ! यह कैसे आश्चर्य की बात है ! मैं समझ रहा था कि रुक्मिणी देवी मितभाषिणी है, पर आज वह बड़ी चतुरोक्तियाँ कर रही है !" कृष्ण ने आश्चर्य प्रकट किया!

पचीस साल पूर्व चन्दामामा में प्रकाशित कहानी

मधुकर का भाग्य

एक गाँव में एक संपन्न सज्जन रहा करता था। वह कर्ण के समान दानी था। मधुकर बचपन से ही उस संपन्न सज्जन का नौकर था। एक बार वह संपन्न सज्जन मधुकर के साथ हाट में गया। वहाँ उसने चंदन की लकड़ी पर बेल-बूटों से सजा एक मूल्यवान रथ देखा। उस रथ में दो घोड़े भी जुते हुए थे। जब संपन्न सज्जन ने देखा कि मधुकर तन्मय होकर उसी रथ प्रतिमा को देख रहा है तो उसने वह रथ खरीद लिया और उसे भेंट के रूप में दे दिया।

एक बार एक मेहमान संपन्न सज्जन के घर आया और मधुकर के कमरे में रखे हुए रथ को देखकर मुग्ध हो गया। उसने कहा, ''कितना सुंदर लगता है! ऐसा रथ कहाँ मिल सकता है?''

संपन्न सज्जन ने फ़ौरन कहा, ''आप इसे ले लीजिए।'' फिर उसने मधुकर के ही हाथों वह रथ मेहमान को दिलवा दिया। मधुकर ने अपने मालिक की आज्ञा का पालन तो किया, पर इस बात पर उसके मन को ठेस पहुँची। संपन्न सज्जन ने यह भाँप लिया और कहा, ''मैं भी पहले मेहनत करता था और ज़िन्दगी गुज़ारता था। अपना भाई कहकर सबसे मैं तुम्हारा परिचय करा रहा हूँ। मैंने सोचा कि तुममें भी मेरी ही तरह दान के गुण हैं।''

सम्पन्न सज्जन की इन बातों से मधुकर का मन थोड़ा शांत हुआ। इस घटना के कुछ दिनों बाद वही मेहमान अपनी बेटी के साथ वहाँ आया और बोला, ''मैंने निश्चय किया है कि अपनी बेटी की शादी आपके भाई से कर दूँ।''

अब मधुकर को चंदन की प्रतिमा के साथ-साथ चंदन की प्रतिमा जैसी सुंदर पत्नी भी मिली।

पर्शियन लोक कथा

मिष्किन की खुशनसीबी

बहुत पहले की बात है। पर्शिया में मिष्किन नामक एक लकड़हारा रहता था। वह कड़ी मेहनत करता था। फिर भी अपनी बीवी का व एकलौती बेटी यास्मिन का पेट भर नहीं पाता था। वह बड़ी मुश्किल से अपने परिवार को चला पाता था।

एक दिन दुपहर को मिष्किन की बेटी यास्मिन अकेली बैठी थी। वह भूख से तड़प रही थी। तब बगल के घर से गोश्त पकने की गंध आने लगी। उसके मुँह में पानी भर आया। उसने सोचा कि खाते समय मैं वहाँ चली जाऊँगी तो वे लोग ज़रूर मुझे भी गोश्त खाने को देंगे। वह अपनी इच्छा पर काबू नहीं पा सकी। ठीक उनके खाना खाते समय वह उनके दरवाज़े के पास जाकर खड़ी हो गयी और बोली, ''चूल्हा जलाना है, थोड़ी-सी आग देने की मेहरबानी करेंगे?''

उस घर की मालकिन ने मुँह चिढ़ाते हुए आग की एक छोटी लकड़ी दी और बिना कुछ कहे मुड़कर चली गयी।

यास्मिन के दिल को धक्का तो लगा ज़रूर, पर उसकी उम्मीद कुछ कम नहीं हुई। थोड़ी देर बाद उसने फिर से उनका दरवाज़ा खटखटाया और कहा, ''आपकी दी आग से चूल्हा जला रही थी, पर हवा से वह बुझ गयी। थोड़ी-सी आग और दीजिए।''

''आग बड़ी पाक होती है। क्या इतना भी यही जानती कि उसे बुझने देना नहीं चाहिए? मैं बखूबी जानती हूँ, तुम आग के लिए नहीं आयी हो। क्या मैं इतना भी नहीं जानती कि हम लोग जो खा रहे हैं, वह तुम भी खाना चाहती हो।'' कहती हुई एक जलती लकड़ी ले आयी और उसे देकर धड़ाम से दरवाजा बंद कर लिया।

यास्मिन को उसकी बातों से बड़ा रंज हुआ। इस बेइज्जती पर वह बेहद ग़मगीन हो गई। शामको लौटे पिता ने उसके ग़म की वजह पूछी। जो हुआ, उसने सबकुछ बताया और ज़ार-ज़ार रोने लगी।

''बेटी, रोना मत। कल ज़्यादा लकड़ियाँ काटूँगा और पैसे कमाऊँगा। मैं तुम्हारे लिए गोश्त लाऊँगा और तुम्हारी माँ को पकाने के लिए कहूँगा,'' यों उसके बाप ने उसे ढाढ़स दिया।

दूसरे दिन सबेरे मिष्किन जल्दी घर से निकला और जंगल गया। पर एक छोटी-सी लकड़ी भी ला नहीं पाया। दावानल की वजह से पूरा जंगल

जल रहा था। खाली हाथ वह घर लौट आया। सबको माड़ पीकर सो जाना पड़ा।

जंगल में दावानल के बुझ जाने में चार दिन लग गये। मिष्किन ने भी ठान लिया कि आज किसी भी हालत में लकड़ियाँ अवश्य ले जाऊँगा। वह जंगल में ही बैठा रहा। शाम हो गयी। एक भी लकड़ी नहीं मिली। उसे मालूम था कि घर पर उसकी बीवी और बेटी इंतज़ार करती होंगी। उनकी याद आते ही वह रो पड़ा।

ऐसे वक्त कुछ दिव्यपुरुष आसमान से गुज़र रहे थे। उन्होंने उसका विलाप सुना। उन दिव्य पुरुषों में एक था याजाद, जो दयालु था। वह मिष्किन के सामने प्रकट हुआ और बोला, ''क्यों रो रहे हो? कौनसी ऐसी तक़लीफ़ आ पड़ी?''

मिष्किन ने अपना दुखड़ा सुनाया और कहा, ''अपनी बेटी की भी भूख मिटाने की मुझमें ताक़त नहीं है। आप ही बताइये, मैं ज़िन्दा क्यों रहूँ?''

याजाद ने झुककर मुट्ठी भर रेत ली और उसे मिष्किन के हाथों में उंडेलते हुए कहा, ''इसे सावधानी से छिपाकर रखो। तुम्हारा भला होगा। जब तुम्हारी ज़िन्दगी सुधर जायेगी तभी यह बात और लोगों से बताना। मुझे दाल, फल, फूल समर्पित करो और उन्हें प्रसाद के रूप में भक्तों में बाँटो। ज़रूरतमंदों की मदद करो और आराम से ज़िन्दगी काटो।'' कहकर वह ग़ायब हो गया।

मिष्किन बड़ी ही सावधानी से रेत को घर ले गया और एक कोने में महफ़ूज़ रखा। सबेरे उठकर उसने देखा कि जहाँ रेत रखी हुई थी, वहाँ वज्रों,

मोतियों व माणिक्यों का ढेर लगा हुआ है। मिष्किन फूला न समाया। उसने घुटने टेककर वहीं याजाद की इबादत की। फिर बीवी और बेटी को उसने सबकुछ बताया, जो जंगल में हुआ था।

बाद में वह एक मणि लेकर वज्रों के व्यापारी के पास गया। उसे देखते ही व्यापारी की आँखें आश्चर्य से चमक उठीं। उसने उसकी क़ीमत मुकर्रर की और उसे बड़ी रक़म दी। धन की थैली को देखते ही मिष्किन के मुँह से एक भी लफ़्ज नहीं निकला।

वहाँ से मिष्किन सीधे बाज़ार गया और वहाँ एक दुकान में दाल, फल, फूल और इलायची आदि खरीदे। मन ही मन दिव्यपुरुष को याद किया और अपना एहसान ज़ाहिर किया। फिर

कुछ दिनों के बाद उसने अपनी बेटी को बुलाया और कहा, ''बेटी, मुझमें यात्रा पर जाने की इच्छा जगी है। कल ही निकलनेवाला हूँ। जब तक मैं नहीं लौटता तब तक तुम हर दिन इबादत करना। दिव्यपुरुष को जो-जो चीजें हम चढ़ाते हैं, उन्हें सबमें बाँटते रहना। वह जिम्मेदारी तुम्हें सौंप रहा हूँ।''

''अच्छा पिताजी। आप बेफिक्र होकर हो आइये।'' यास्मिन ने कहा। परंतु शनैः शनैः यास्मिन की सोच में, रहन-सहन में परिवर्तन आते गये। शहर के अमीरों से उसकी दोस्ती होने लगी। शाहज़ादी से उसका परिचय हो गया। परिचय दोस्ती में बदला। दोनों मिलकर कभी-कभी बन-विहार पर जाती थीं। वह उस दिव्यपुरुष को भूल ही गयी, जिसकी वजह से वह संपन्न बनी थी। पिता ने जिस इबादत के बारे में कहा था, जिन फूलों, फलों और दालों को बाँटने की जिम्मेदारी उसे सौंपा थी, उसे उनकी याद ही नहीं थी।

फल-फूल आदि वहाँ के लोगों में बाँटे।

उस दिन की दुपहर को वे सब पकवान बनवाये गये, जो बेटी यास्मिन को पसंद थे। सबने भरपेट खाया।

बहुत ही जल्दी मिष्किन के हालत बदल गये। उसने एक बहुत बड़ा महल बनवाया। अब उसकी ज़िन्दगी में किसी बात की कमी नहीं थी। दिव्यपुरुष के प्रति उसके मन में श्रद्धा और भक्ति बढ़ती गयी। वह हर रोज इबादत करने से चूकता नहीं था। वह लोगों से याजाद की मेहरबानी के बारे में बताता था और प्रसाद के रूप में फल, फूल, दाल उनमें बाँटता था। जो भी मदद माँगता, देता था।

एक दिन यास्मिन शाहज़ादी के साथ शाही बग़ीचे में टहल रही थी, तभी उन्हें एक सुंदर सरोवर दिखायी पड़ा। शाहज़ादी ने कहा, ''थोड़ी देर तक सरोवर में तैरें और नहा-धो लें?''

यास्मिन ने कहा, ''मैं तैरना नहीं जानती। तुम नहा लो। मैं किनारे पर बैठी रहती हूँ।'' कहकर वह एक पेड़ के नीचे बैठ गयी।

शाहज़ादी ने अपने गहने निकाले और उन्हें यास्मिन के सामने रखकर सरोवर में उतरी।

उस समय ठंडी हवा चल रही थी। ठंडी हवा का मज़ा लेती हुई यास्मिन सो गयी। तब एक पक्षी उड़ता हुआ आया और शाहज़ादी के कंठहार को उठाकर ले गया। यास्मिन को इसका पता ही नहीं चला।

नहा चुकने के बाद जब शाहज़ादी लौट आयी तब उसने देखा कि उसका कंठहार ग़ायब है। वह परेशान हो उठी। उसने नाराज़ी से पूछा, ''यास्मिन, मैंने सोचा तक नहीं था कि तुम ऐसा बेहूदा काम करने पर तुल जाओगी।'' यास्मिन ने बताया भी कि वह कुछ नहीं जानती, पर शाहज़ादी ने उसकी बातों पर एतबार नहीं किया। वह सीधे अपने पिता के पास गयी और यास्मिन की शिकायत की। फलस्वरूप यास्मिन और उसकी माँ को जेल में बंद कर दिया गया।

यात्रा से लौटने पर मिष्किन को अड़ोस-पड़ोस के लोगों ने पूरा वृतांत बताया। मिष्किन दौड़ा-दौड़ा गया और बादशाह के पैरों पर गिर पड़ा। उसने बादशाह से मिन्नत की कि बीवी और बेटी की जगह पर उसे क़ैद कर लिया जाए और उन्हें छोड़ दिया जाए। बादशाह ने वैसा ही किया, जैसा वह चाहता था।

मिष्किन को जंजीर से खंभे से बाँध दिया गया। उस रात को उसने तहेदिल से उस दिव्यपुरुष की इबादत की। तब याजाद ने प्रकट होकर कहा, ''की गयी भलाई को भुलाना गुनाह है और तुमने यह बहुत बड़ा गुनाह किया।''

''मेरी मासूम बेटी ने यह गुनाह किया। उसके लिए उसने सज़ा भी भुगत ली। हमें माफ़ कीजिए, हमपर मेहरबानी कीजिए और हमें इन तक़लीफ़ों से उबारकर कोई रास्ता दिखाइये।'' मिष्किन गिड़गिड़ाया।

उस दिव्यपुरुष ने उनपर मेहरबान होते हुए कहा, ''सबेरा होते ही वह जंजीर टूट जायेगी। खंभे के पास धन दिखायी देगा। उस धन से फल, फूल,दाल आदि मंगाना और इबादत कराओगे तो तुम्हारी तक़लीफ़ें आप ही आप दूर हो जायेंगी।'' यह कहकर वह ग़ायब हो गया।

रात भर मिष्किन सो नहीं पाया। सबेरा होते ही दिव्यपुरुष के कहे मुताबिक़ जंजीर टूट गयी और खंभे के पास धन भी दिखायी पड़ा।

धन लेकर जेल के दरवाजे से होता हुआ बाहर

झांककर देखा। गली से गुज़रते हुए एक आदमी को उसने बुलाया और उसे कहा, "दोस्त, यह धन लो और इससे फल, फूल, दाल खरीदकर ले आना। क्या मेरा यह काम करोगे?

वह आदमी उस समय बड़ी जल्दी में था। उसे अभी-अभी मालूम हुआ था कि उसके बेटे की हालत बहुत नाजुक है और वह किसी भी पल मर सकता है। परंतु मिष्किन के दीन स्वर ने उसके दिल को हिला दिया। वह अपने काम को भी भुलाकर उस धन से वे सारी चीज़ें ले आया, जिन्हें ले आने की मिन्नत मिष्किन ने की थी। मिष्किन ने अपनी कहानी उसे बतायी और खुदा की इबादत करते हुए वह प्रसाद उसे देकर भेजा।

वह मुसाफ़िर जब घर पहुँचा तब उसने देखा कि उसका बेटा एकदम चंगा और हँसता हुआ उसके सामने आ रहा है। तब से लेकर वह भी दिव्यपुरुष की इबादत करने लगा।

दिव्यपुरुष के प्रति जैसे-जैसे मिष्किन की निष्ठा बढ़ती गयी, वैसे-वैसे उसका भाग्य भी पलटता गया। एक दिन बादशाह जब अपने शाही बगीचे में अपने परिवार के लोगों के साथ टहल रहा था तब एक उड़ते हुए पक्षी के मुँह से शाहज़ादी का कंठहार नीचे गिर पड़ा। शाहज़ादी ने उसे देखकर कहा, "पिताजी, मेरा कंठहार मिल गया। मैंने ग़लत समझ लिया था कि यास्मिन ने इसकी चोरी की।"

बादशाह को इस बात पर बहुत रंज हुआ कि मैंने बेकार ही मिष्किन और उसकी बीवी व बेटी को सज़ा दी। उसने फ़ौरन मिष्किन को रिहा कर दिया।

बादशाह ने मिष्किन से कहा, "मुझे माफ़ करना। मुझसे हुई बड़ी ग़लती को सुधारने का एक ही रास्ता है। मेरे बेटे से तुम्हारी बेटी की शादी हो जाए। तुम जैसे भक्तों के परिवार से रिश्ते जोड़ना मेरा भाग्य नहीं तो और क्या है।"

मिष्किन बहुत खुश हुआ। यास्मिन की शादी शाहज़ादे से बहुत बड़े पैमाने पर हुई। मिष्किन जानता था कि यह सब उस दिव्यपुरुष की मेहरबानी है।

उत्तम क्या-क्या है?

स्वर्णगिरि और भुवनगिरि हालांकि अड़ोस-पड़ोस के राज्य थे, पर जल-साधन के क्षेत्र में दोनों राज्यों में बड़ा अन्तर था। छोटी ही सही, स्वर्णगिरि में तीन नदियाँ बहती थीं। भूमि काफ़ी उपजाऊ थी। इसलिए किसान वहाँ दो फसलें उगाते थे।

पर भुवनगिरि की स्थिति इससे बिलकुल भिन्न थी। वहाँ कोई नदी नहीं थी। समय पर वर्षा नहीं होती थी। उन्हें अक़्सर अकाल का सामना करना पड़ता था। पर उस राज्य का राजा विमलादित्य समर्थ था। उसका एकमात्र लक्ष्य प्रजा-क्षेम था। उसके शासन-काल में परिश्रमी प्रजा उत्तरोत्तर प्रगति कर रही थी।

उस समय स्वर्णगिरि का आस्थान पंडित कमलनाथ भुवनगिरि के राजा से मिलने आया और कहा, ''महाराज, केवल साधन-संपत्ति में ही नहीं, बल्कि हमारी स्वर्णगिरि समस्त कलाओं का भी केंद्र है।'' राजा ने मुस्कुराते हुए कहा, ''बड़ी खुशी की बात है।'' ''हमारे महाराज हमारी सलाह को कार्यान्वित करते हैं, इसलिए देव भाषा संस्कृत आम लोगों की भाषा बन गयी। हमारी प्रजा की बुद्धिमत्ता व मेधा शक्ति अद्‌भुत है।'' कमलनाथ यों अपने राज्य की महानता के पुल बाँधे जा रहा था।

परंतु राजा इतना सब कुछ सुनने के बाद भी चुप्पी साधे हुए थे। तब आस्थान कवि कुमुद आगे बढ़ा और बोला, ''आर्य, हो सकता है, आपके राज्य में जो साधन-संपत्तियाँ हैं, जो कलाएँ हैं, इस राज्य में न हों। पर आपका यह समझना ग़लत है कि जो बुद्धिमत्ता व मेधा-शक्ति आपकी प्रजा में है, वह और कहीं नहीं है। हमारी प्रजा भी अक़्लमंदी में कुछ कम नहीं है।'

''क्या आप साबित कर सकते हैं?'' कमलनाथ ने ज़ोर देकर पूछा।

''चाहें तो आप स्वयं इसकी परीक्षा ले सकते

''मैं तो पढ़ना-लिखना नहीं जानता। मुझे नौकरी कौन देगा? नौकरी करने सब शहर चले जाएँ तो यह काम कौन करेगा?'' रंगा ने कहा।

पंडित ने मुस्कुराते हुए पूछा, ''रंगा, मेरे तीन संदेह हैं। क्या ये संदेह दूर कर सकते हो?''

''आप जैसे बड़ों के संदेह मैं कैसे दूर कर सकता हूँ। फिर भी हो सका तो दूर करने की कोशिश करूँगा।'' रंगा ने निश्चिंत हो कहा।

''पुष्पों में से कौन-सा पुष्प उत्तम है?'' पंडित ने पूछा।

''कमल पुष्प,'' रंगा ने तुरंत जवाब दिया।

''तुमने तो बिलकुल ठीक कहा। कमल लक्ष्मी सरस्वती का निलय है। अब बताओ, कौन-सा

हैं। आप चाहें तो हमारे गाँवों की जनता से ही इसकी परीक्षा शुरू की जा सकती है,'' कुमुद ने आत्मविश्वास भरे स्वर में कहा।

''ठीक है, यह परीक्षा अभी लूँगा।'' कहता हुआ कमलनाथ तेज़ी से आस्थान से बाहर आया। दूसरे दिन वह नगर की सरहद के एक छोटे-से गाँव में गया। उसने देखा कि गाँव के बाहर एक चरवाहा युवक पशुओं को चरा रहा है। कमलनाथ ने उससे पूछा, ''तुम्हारा नाम क्या है बेटा? क्या कर रहे हो?''

''मुझे रंगा कहते हैं। देखते नहीं, मैं बबूल के फल तोड़ रहा हूँ।'' युवक ने कहा।

''इस कड़ी धूप में यह काम करने की क्या ज़रूरत है? कोई नौकरी कर सकते हो न?'' कमलनाथ ने पूछा।

जल उत्तम है?'' पंडित ने दूसरा प्रश्न पूछा।

''जलप्रपात का जल,'' रंगा ने जवाब दिया।

''तुम्हारा यह उत्तर भी बिलकुल सही है। यह वह स्वच्छ जल है, जो शिव की जटाओं से प्रवाहित होती हुई आकाशगंगा है।'' फिर पंडित ने उसकी पीठ को थपथपाते हुए पूछा, ''प्रकाशों में कौन-सा प्रकाश उत्तम है?''

''सूर्य प्रकाश,'' रंगा ने कहा। ''सब प्रकाशों का मूल उस सूर्य भगवान की दिव्य किरणें हैं। वे ही उत्तम और अद्वितीय हैं।'' ''तुम्हारी बुद्धि की प्रशंसा किये बिना नहीं रह सकता।'' बहुत खुश होते हुए पंडित ने अपनी उँगली की अंगूठी उसकी उँगली में पहनानी चाही।

रंगा ने ऐसा करने से मना किया और कहा, ''ठहरिये, आपने जो सवाल किये, इनके जवाब

साधारणतया सब दे सकते हैं। इसके लिए भेंट देने की क्या ज़रूरत है?''

पंडित ने आश्चर्य-भरे स्वर में पूछा, ''तो क्या ऐसे प्रश्नों के उत्तर भी तुम दे पाओगे, जो सब लोग नहीं जानते?'' ''कोशिश करूँगा।'' रंगा ने विनयपूर्वक कहा। ''तो बताना, मैं भी जानूँ।'' पंडित ने उत्सुकता भरे स्वर में कहा।

''उत्तम पुष्प कमल नहीं है, उत्तम है कपास का फूल। कमल देखने में सुंदर अवश्य लगता है लेकिन शामको वह मुरझा जाता है। कपास का फूल बौंडी, फल और कपास में बदलकर वस्त्र बनाने के उपयोग में आता है। इसीलिए वह उत्तम फूल है। रेगिस्तान में पाया जानेवाला पानी उत्तम पानी है, क्योंकि वह प्यासे की प्यास बुझाता है। उसे ज़िन्दा रखता है। अब रही प्रकाश की बात। मनुष्यों की आँखों में जो करुणापूरित कांति झलकती है, वही उत्तम प्रकाश है, क्योंकि वह दीनों की रक्षा करती है,'' रंगा ने कहा।

कमलनाथ, रंगा की असाधारण प्रतिभा को देखकर भौचक्का रह गया। वह बड़े ही प्यार से गले मिला। वह अब तक समझता था कि उसके राज्य की जनता ही अक्लमंद है और उनकी समानता करनेवाले कोई हैं ही नहीं। अब उसका अहंभाव दूर हो गया। एक तरफ़ इस राज्य के लोग प्रकृति की प्रतिकूल परिस्थितियों का डटकर सामना कर रहे हैं और साथ ही प्रगति कर रहे हैं। दूसरी तरफ़ विद्या संबंधी विषयों में भी असमान प्रतिभा प्रदर्शित रहे हैं। वह राजा की भी प्रशंसा किये बिना रह नहीं सका, जो उनका सही दिशा-निर्देशन कर रहे हैं और उन्हें प्रगति-पथ पर ले जा रहे हैं। मन ही मन विमलादित्य की प्रशंसा करते हुए वह स्वर्णगिरि लौट गया।

चन्दामामा प्रस्तुति
अपराजेय गरुड़
23
चित्र : पाणि.
नरेन्द्रदेव और बेटे रवीन्द्रदेव के राजद्रोही घोषित होने के पश्चात आदित्य उन्हें पकड़ने जाता है। सर्पदेश पहुँचकर वह अपने आदमियों के एक दल को उस स्थान का सर्वेक्षण करने के लिए भेजता है। वे एक युवा आदिवासी दम्पति को पकड़ते हैं। आदित्य उनके सामने यह रहस्योद्घाटन करता है कि वह स्वयं, न कि आदिवासी युवक, जिसका भी नाम वही है, वह व्यक्ति है जिसे तांत्रिक को तलाश है। कमान्डर तथा उसके आदमी, जिनकी मार्ग रक्षा आदिवासी प्रमुख कर रहा है, नदी पार करने के लिए नाव पर सवार होते हैं।

नरेन्द्रदेव और उसके आदमी नावों में उपलब्ध आनन्द और आराम के सभी साधनों का पूरा लाभ उठाते हैं। वे खाने-पीने के आनन्द में मग्न हैं।
आदित्य हमारे लिए बड़ा शिकार होगा।
यदि वह साठवाँ बलिदान बनता है तो तांत्रिक बड़ी शक्तियों का स्वामी हो जायेगा।

चाँदनी रात, ठण्डी हवा और नाविकों की गुनगुनाहट। यात्री शीघ्र ही गहरी नींद में चले गये।
हम लोग सुबह तक किनारे पहुँच जायेंगे।

नरेन्द्रदेव और उसके आदमी विलम्ब से सक्रिय होते हैं। नाविक आग के गोलों से बचने के लिए नदी में कूद जाते हैं। उन पर मगरमच्छ आक्रमण कर देते हैं।

आग के गोले? कौन उन्हें भेज रहा है?

महोदय, मुझ पर प्रहार हुआ। कृपया मुझे बचाओ !

तुम्हारे नाविक कहाँ हैं?

मगरमच्छ ! मेरा आखिरी दिन !

नरेन्द्रदेव और आदिवासी प्रमुख हक्का-बक्का हैं। नाविक नाव को नियंत्रित रखने तथा आग के गोलों और तीरों से बचाने में असमर्थ हैं। नाव एक चट्टान से टकराकर पलट जाती है।
प्रमुख ! हम अब क्या करें?
कमाण्डर ! हम लोग केवल नदी में कूदकर और किनारे तक तैरकर ही अपनी जान बचा सकते हैं।
ओह ! मगरमच्छ ! मेरा पाँव ! मेरा पाँव चला गया !
पलटी हुई नाव तेज प्रवाह में नदी के किनारे तक बह जाती है।
कमाण्डर ! मैं आ गया हूँ। नाव को पकड़े रहो।

आदिवासी प्रमुख भूखे मगरमच्छों द्वारा टुकड़े-टुकड़े कर दिया जाता है। शरीर का बचा-खुचा भाग नदी के तल में डूब जाता है जो अब खून की तरह लाल है।
ईश्वर को धन्यवाद! हम लोग उसे बचा पाये!
उसके पाँव गायब हैं। एक हाथ भी!
वह बेहोश है।
नरेन्द्रदेव को होश आ जाता है और वह पश्चाताप कर रहा है।
मैंने पाप किया है। मैं राजद्रोही हूँ और अब मैं और अधिक दिन जीवित नहीं रहना चाहता। मेहरबानी करके मेरे प्राण ले लो।
इसे अपने शिविर में ले जाओ और इसकी देखभाल करो। जब तक दूसरे एकत्र न हो जायें, हम लोग यहीं प्रतीक्षा करेंगे।
विद्रोही आदिवासी अग्निकुण्ड के चारों ओर एकत्र होते हैं और नाचना-गाना आरंभ कर देते हैं।
क्रमशः

चित्र पर चकती चिपकाओ

ओह-ओह ! किसी ने इगली विगली कीट का मनोहर चित्र नष्ट कर दिया है। क्या तुम उसे ठीक-ठाक करने में मदद करना नहीं चाहते?
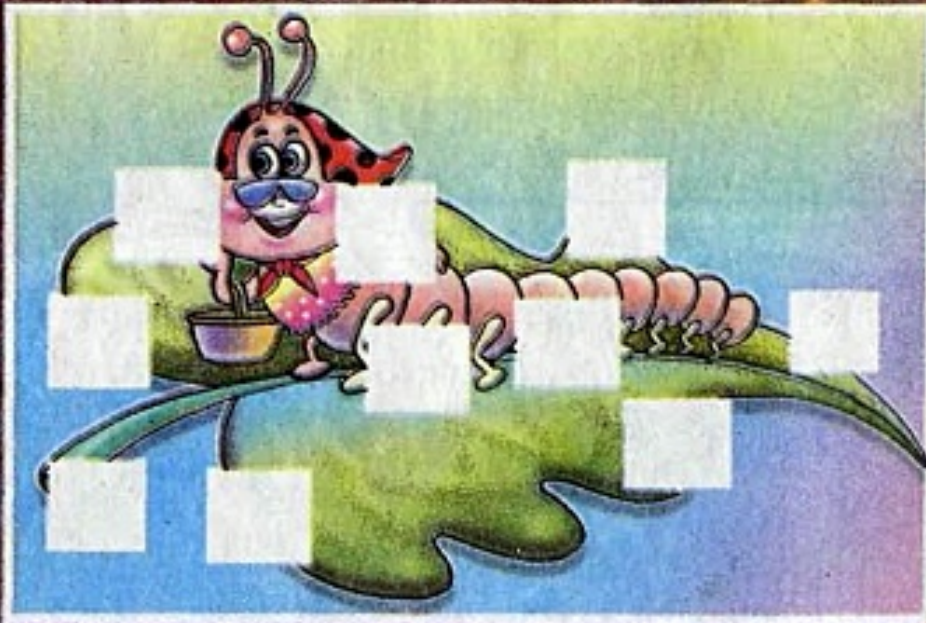
छोटे वर्गों के विभाग को काटो और एक गत्ते पर चिपका दो। अब वर्गों की एक-एक इकाई को काटो। और ध्यान रखो कि तुम उन्हें समुचित स्थान पर चिपकाओ और इगली विगली का चित्र पूरा करो। पूरा हो जाने पर ऊपर दिये गये वास्तविक चित्र से इसका मिलान करो।

मशरुम भूलभुलैया

झॉन्डु वान्डु अपनी दादी के पास जा रहा है। लगता है दादी को नींद आ गई है और वह उसकी आवाज नहीं सुन सकी। मशरुम के फिसलनेवाले तने पर दादी के दरवाजे तक जाने का मार्ग बना हुआ है। लेकिन वान्डु के लिए यह चकरा देनेवाला है। क्या तुम कृपया सही रास्ते से जाने में उसका मार्गदर्शन कर सकते हो?

(उत्तर पृष्ठ ६६ पर)

इनकी जोड़ी मिलाओ

क्या रिंकी रिनो मनोहर मुद्रा में नहीं दिखाई दे रहा है? लेकिन इनमें केवल दो चित्र एक समान हैं। ध्यान से देखो और उन्हें पहचानो।

चित्र कैप्शन प्रतियोगिता

क्या तुम कुछ शब्दों में ऐसा चित्र परिचय बना सकते हो,
जो एक दूसरे से संबंधित चित्रों के अनुकूल हो?

चित्र परिचय प्रतियोगिता, चन्दामामा,
प्लाट नं. ८२ (पु.न. ९२), डिफेन्स आफिसर्स कालोनी, इकाडुथांगल, चेन्नई -६०० ०९७.

जो हमारे पास इस माह की २० तारीख तक पहुँच जाए। सर्वश्रेष्ठ चित्र परिचय पर १००/-रुपये का पुरस्कार दिया जाएगा, जिसका प्रकाशन अगले अंक के बाद के अंक में किया जाएगा।

बधाइयाँ

नवम्बर अंक के पुरस्कार विजेता हैं :

टी. अभिषेक, C/o. टी. सुभाष चन्द्र
३१-७-१, कुम्मरी स्ट्रीट,
निकट - अलीपुरम गाँधी स्टैचू जंक्शन,
विशाखा पट्टनम, आन्ध्र प्रदेश - ५३० ००४.

विजयी प्रविष्टि

मैं तो भइया के कन्धे पर बैठ चला बाजार
लाना सारी ढेर मिठाई, गुड़िया भी दो चार

मनोरंजन टाइम्स (पृष्ठ ६५) के उत्तर

इनके जोड़ी मिलाओ : चित्र २ और ४ एक समान हैं।

Printed and Published by B. Viswanatha Reddi at B.N.K. Press Pvt. Ltd., Chennai - 600 026 on behalf of Chandamama India Limited, No. 82, Defence Officers Colony, Ekkatuthangal, Chennai - 600 097. Editor : Viswam

CHANDAMAMA (Hindi) JANUARY 2003
Regd. with Registrar of Newspaper for India No. 1087/57
Registered No. TN/CPMG-866/2002
Licensed to post without prepayment No. 541/02 /
Foreign - WPP. No. 560